केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अगस्त - अक्तूबर २०१३ अंक, वर्ष १९, नं ६४, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के ३३वें वार्षिक सम्मेलन को उद्घाटन
केरल के माननीय राजपाल श्री. निखिलकुमार जी ने किया।
उनके समीप अकादमी के अध्यक्ष दीप जलाते हैं।

केनरा बेंक में संपन्न हिन्दी पक्षाचरण का वार्षिक उद्घाटन
डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी ने किया था।
केरल के विभिन्न बेंकों के जनरेल मानेजरों को जमात

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ अगस्त - अक्तू २०१३ अंक, वर्ष १९, नं ६४ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्दूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलह्रापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

शोधपत्रिका - अकादमी - संपादक

यह संपादकीय शोध पत्रिका के निजी सम्पादक का नहीं है। संपादक डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर आज अपनी नवति के आनन्द और ध्यान में थोडे समय के लिए मौन धारण कर गये हैं। "हिन्दी पढ़ना और उसका प्रचार करना राष्ट्र की सेवा है" यह महात्मा गाँधी का सन्देश था। यह सन्देश चन्द्रशेखरन ने सुना था सत्रह वर्ष की अवस्था में। उन दिनों उसके कोमल मन ने उस महापुरुष के आशय को सर्वोपरि माना था। हिन्दी पढ़ना अपना परम लक्ष्य माना था। पढ़ना शुरु किया। शास्तामकोट्टा नामक ग्रामीण वातावरण में हिन्दी भाषा एक अजनबी शब्द मात्र था। राघवन नामधारी एक प्रचारक कोट्टारक्करा से आये भाग्य से। हाँ, पढ़ना शुरु हुआ। दो-तीन परीक्षाओं में उन्होंने बैठाया और पास हो गया। फिर प्रचारक के न आने पर भी स्वयं पढ़कर मद्रास हिन्दी प्रचार सभा की विशारद परीक्षा पास कर ली। अपने गाँव के एक हाईस्कूल में मास्टर बना। ५ अगस्त १९४७ का आचरण न करने दिया तो, प्रिन्सिपल से बिगडकर स्कूल की नौकरी से इस्तीफा दे दिया। फिर पुनलूर, शास्तमंगलम स्कूलों में मास्टर रहे। १० अक्तूबर १९५१ को महात्मागाँधी कालेज के टूटर बने। फिर सन् १९८४ को फस्टग्रेड हिन्दी प्रोफसर के पद से सेवा निवृत्त हो गये। लेकिन कर्मनिरत मास्टर को कहाँ अपने अध्यापन जीवन से निवृत्त होना संभव होगा। १९८५, ८६, ८७ तीन वर्षों के लिए यू.जी.सी. के मेजर रिसेर्च फेलो बने। उस काल के अवसान होते होते यू.जी.सी. ने उन्हें प्रोफसर ऐमिरिटस बनाकर स्वयं कृतकृत्य हुए। इस प्रकार डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी यू.जी.सी. का प्रथम केरल का ही प्रोफसर एमिरिटस बना। सन् १९५७ को वे बिहार विश्वविद्यालय से शोध-उपाधि पा ली थी।

आज डॉ.नायर जी देश के ही सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार, वरिष्ठ आचार्य, प्रख्यात चित्रकार, जागरुक संगाठक, प्रख्यात वाक्मी, सर्वोपरि अतुलनीय हिन्दी सेवी के रुप में जाने जाते हैं। नवति की पूर्ति में भी उन्हें एक कर्मयोगी की स्थिति बनाये रखने का बल उनके अंतरस्थ परमात्मा उन्हें प्रदान कर रहे हैं।

यह शब्द उन्हें भौतिक रुप से प्राप्त सिद्धियों की ओर ज़रा भी संकेत नहीं दे सका है। उन्हें आशीर्वाद देना मात्र यहाँ कर्तव्य था। अपने गुरु सदृश्य महान को शत-शत वन्दन!!

अतिथि सम्पादक आर. राजपुष्पम

कविता

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर अध्यक्ष - केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के मानार्थ

डॉ. भूपेन्द्रकुमार सिंह

"हे सरस्वती के वरद् पुत्र,
हे गीतकार, हे चित्रकार,
जिनकी यश गाथा रचें नित्य,
लेखनी, तूलिका बार बार

जिसने हिन्दी की दीप शिखा
दक्षिण भारत में फैला दी,
जिनके श्रम के साक्षी हिमगिरि
जिसका प्रमाण है सह्याद्री,

जो नन्हा बीज, उगा, उग कर,
इतना फैला वट वृक्ष बना,
जिनकी श्वांसों में संबल है,
जो महामेघ सा भरा, घना,

जिनको जीवन के वर्षों ने,
तरुणाई रोज नई बांटी,
जिसके श्रम-सीकर पी पीकर,
रचना धर्मी केरल माटी,

हे हिन्दी के अद्भुत सेवक,
हे माता के गौरव ललाम,
हे हिन्दी के मस्तक चंदन
तुमको प्रणाम, तुमको प्रणाम,

मैं मध्यप्रदेश की धरती से,
लाया हूं अभिनंदन वंदन,
मीरा कबीर की वाणी भी,
तुलसी के माथे का चंदन

हे कालजयी, हे ज्योति पुरुष.
हे हिन्दी के सेवक महान,
तुम जियो शताधिक वर्ष और
गाओ हिन्दी के अमर गान।।"

एसो.प्रोफेसर-हिन्दी, शा.ठा. रणमत सिंह स्वशासी एवं उत्कृष्टता शोध केन्द्र, वी-१६, टी.आर. एस. प्रोफेसर्स कालोनी, टी.आर. एस.कालोनी कैम्पस, रीवा (म.प्र.) ४८६०००१

अकादमी की 50 पुस्तकें 25 प्रतिशत कमीशन पर मिलेंगी, आदेश भेजें

1.	**हिन्दी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि (यू.जी.सी.द्वारा प्रकाशित)** *(ज्ञानपीठ पुरस्कारप्राप्त पंत जी और जी.शंकरकुरुप*	-	310.00
2.	**वहुचर्चित कहानियाँ** *(असंख्य देशी और विदेशी भाषाओं में अनूदित और सारिका मे प्रकाशित डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की 21 कहानियाँ)*	-	250.00
3.	**कविताएं देश भक्ति की (कविताएं)** *(सांस्कृतिक एवं चेतनापरक)*	-	150.00
4.	**गाँधीजी भारत के प्रतीक (लेखों का संकलन)** *(अनेक संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत)*	-	50.00
5.	**देवयानी (नाटक)** *(केन्द्रसरकार द्वारा प्रथम पुरस्कार)*	-	30.00

लेखक ध्यान दें

प्रकाशनार्थ भेजे जानेवाले लेखों की प्राप्ति-सूचना केलिए पता लिखा हुए कार्ड अवश्य साथ भे जें।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर की कहानियों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि

प्रो.डॉ. पंडित बन्ने

डॉ. नायरजी अहिंदी भाषी है। लेकिन हिन्दी भाषा तथा साहित्य की प्राणधारा को उन्होंने गहराई से आत्मसात किया है। भारतीय संस्कृति के प्रति उनके मन में गहरी आस्था है। डॉ. नायर जी का कथा साहित्य एक निश्चित उद्देश्य लिए पाठकों में भारतीय संस्कृति की गूँज स्पंदित करने में प्रयासरत है। साहित्य और कला दोनों की धुरी में भारतीय संस्कृति के पहिये लगाकर डॉ.नायर जी ने आदर्शमय जीवन को गति देने का उदार यत्न किया है। उनके साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है भारत की आध्यात्मिक परंपरा एवं चिरंतन मानवीय मूल्यों के वैज्ञानिक युग की पृष्ठभूमि की प्रतिस्थापना। भारतीय चिर पुरातन संस्कृति के महान आदर्श, त्यागमय भोग, नारी की दिव्यता, अनेकता में एकता आदि उनके साहित्य में अनुस्यूत है। पौराणिक पात्रों के साथ-साथ आम व्यक्ति के यथार्थ जीवन की भी डॉ.नायर जी ने अपने साहित्य का अंग बनाया है। कहानीकार नायर जी काफी आशावादी प्रतीत है। साथ ही सामाजिक संदर्भों के द्रष्टा भी है। हमारी संस्कृति की समाज सापेक्ष्य यथार्थ समसायिकता के आधार पर उन्होंने कहानियों के द्वारा स्पष्ट किया है।

'हार की जीत' कहानी का मायादेवी भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति है। भारतीय नारी के व्यक्तित्व को उजागर करनेवाली मायादेवी अपने व्यक्तित्व की गरिमा से अपनी हार को जीत में परिणत कर देती है। अपनी पत्नी मायादेवी को कवि सूश्री की कविताओं की ओर विशेषतः उन्मुख देखकर उनका मन शंकाग्रस्त हो उठता है। अपनी पत्नी से बिना कुछ कहे उसे छोडकर चला जाता है। राजा द्वारा की गई अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिष्ठा को प्रमाणित करती है जो भारतीय नारी की पहचान है। पति के प्रति उसकी निष्ठा उसके कथन से व्यक्त है - "महाराज तो मेरे लिए परमेश्वर सदृश्य है। इस उम्र में उनके अतिरिक्त और किसी की छाया तक मेरे हृदय में नहीं पड़ी है। पुण्य से ही वे मुझे प्राणनाथ के रूप में मिल गये पर आज वह अस्वस्थ हैं, यह मैं कैसे देख सकूँगी।" (हार की जीत - डॉ.नायर, पृ.२८-२९).

इस अग्नि परीक्षा में रानी सफल होकर अपनी प्रतिनिष्ठा को प्रमाणित करती है। प्रत्येक पुरुष की इच्छा होती है कि उसकी पत्नी पतिव्रता हो जो कदाचित संस्कृति के अनुरूप ही है। रानी की पतिनिष्ठा उसकी हार को जीत में परिणत कर देती है। आदर्श नारी का आदर्श रूप मायादेवी के माध्यम से कहानीकार ने चित्रित किया है।

'कान्ह गायब हो गया' कहानी की लता वयस्क होती नवयुवती का चरित्र है। मातृहीन पुत्री को कलाकार पिता आनंद लाड़-प्यार से पालता है वही समाज के पाखंडी पुजारी मंदिर जैसे पवित्र पावन तीर्थ पर उसे छेड़ने का प्रयास करते हैं। बेटी की मनोदशा देख पिता आनंद कुछ-कुछ अनुमान लगा लेता है और धर्म के ठेकेदारों के इस अनुचित व्यवहार पर क्रोध से भर जाता है। धर्म के ठेकेदारों के अनाचार को सभी भक्तों के समक्ष प्रस्तुत कर अपने जीवन में व्याप्त वेदना को हल्का कर धीरे-धीरे अपनी बेटी के सुखमय भविष्य की चिंता में वह कलाकार बाप अपनी कुटिया में लौट आता है। यहाँ धार्मिक भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करना कहानीकार का उद्देश्य रहा है। डॉ.नायर कहानी के माध्यम से नारी की सुरक्षा पर इसमें विचार किया गया है।

'चमार की बेटी' कहानी में भारतीय समाज की एक ज्वलंत समस्या अनमेल विवाह का चित्रण है। पंद्रह साल की अल्हड़ किशोरी प्रतिभाशाली कुंती को उसका पिता दहेज न दे सकने के कारण एक बूढ़े से शादी करने की विवशता में है। अपने सामने कोई मार्ग न होने पर कुंती अपनी अदम्य इच्छाओं को तजकर गंगा की पवित्रता में लीन हो जाती है। कहानीकार ने घर और समाज में नारी की बुरी हालत को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

'भवोति अम्मा' कहानी का नारी पात्र भवोति अम्मा है। कहानीकार का उद्देश्य इस नायिका का रेखाचित्र खींचना नहीं है, पाठकों को उसके बाहरी रूप को भेदकर अंतरंग में स्थित वेदना, ममता आदि का परिचय देना है। पतिविहीन भवोति अम्मा स्वाभिमानी है जो दूसरे के सम्मुख हाथ पसारने को तैयार नहीं है। अपने बच्चों को गाली देना तथा मारना-पीटना उसके नित्य क्रम में शामिल है। भवोति अम्मा का यह विकृत रूप समाज की ही देन है। समाज ने कभी उसकी विपन्नता पर तरस नहीं खाया और चार पितृहीन बच्चों की माँ निराशा और अभावों में जीवन जीती रही। उसकी बाहरी विकृतियाँ उसके भग्न हृदय से ही उद्भूत है। वोट माँगने आये नेताओं से कहती है - "अरे भाई तुम लोग क्यों मारे - मारे फिर रहे हो? तुम्हें वोट चाहिए? किसके लिए? खूब रहा? मेरा बोट पाकर तुम शासन खूब कर चुके हैं। आए हो, शरम नहीं आयी तुम्हें। मेरे दो बच्चे भूख से तड़प-तड़प कर मरे तब किसी कुत्ते को इस ओर झांकते नहीं पाया। मैंने अकेले अपने बच्चों को दफना दिया।" (भवोति अम्मा, पृ.३१) कहानीकार की दृष्टि में अपराधी वह समाज और शासन है जिसने मानव को भूख और क्षोभ से मुक्त करने का कोई प्रयास नहीं किया है।

'अजन्ता का कलाकार' कहानी में कुलीन वर्ग की नारी और एक गरीब चित्रकार के बीच में जो वर्ग संघर्ष है, इसका चित्रण हुआ है। सवर्ण जाति में जन्मी राजलक्ष्मी के मन में अजन्ता के चित्रकार के प्रति सम्मान की भावना है, लेकिन उस चित्रकार के चित्रों के प्रति जो प्यार है, उससे ऊपरी दृष्टि से अपवित्रता का संकल्प खत्म हो चुका

गाँधीजी की छाया में एम.पी.मन्मथन

निर्मला राजगोपाल

स्मृति-दर्पण में दीप्त महान की स्मृतियाँ
पुष्प बनकर सुगंध फलाती हैं!
हे काल! अधर्म के पंथों से चलनेवाला काल!
तू देख्र लेना उस महा धीर कर्मयोगी को
आदर्श चर्या में, चिंतन में अचंचल
जीवन-प्रयाण में ले चला सत्य मात्र को
केवल धर्माचरण धारण करते हुए
कल्मषहीन संकल्पों को दे समाज को
देश की स्वाधीनता के लिए
महात्मा गाँधी की छाया में पावन
अनधके चलते उस-उस योधा की स्मृति में
आँसू बहाती है माता मलयालम आज
साथी रहे 'भारत केसरी' के
दिन-रात सहचर बन, किया स्वधर्म सेवन
स्वर्ध माने समाज-सेवन
जन-जन बने अवाक देख्र जयघोष
देख्रना उस आकार को चेतनामय
सुनें, मुंह से निकलता शब्द कैसे
योधा निरायुध बन
समाज-पापों को निर्मूल करने
बने, नट, कथावाचक, गुरुवर,
वाह! धन्य हो गया जन्म!
नमन करते हैं हम आपके,
अमितावेग के साथ महित प्रभाव को।
महाकाल के पथों में दीपित रहो
आगंतुक दर्शक जन दीपित रहें!

अनुवाद - डॉ.एन.चन्द्रशेख्ररन नायर

डॉ.एन.चन्द्रशेख्ररन नायर की कहानियों में सामाजिक एवं सास्कृतिक दृष्टि...

है। कहानी के अंत में जातीयता अपना भयंकर रुप धारण कर लेता है। राजलक्ष्मी को छूने की चित्रकार की अदम्य चाह के आगे प्रतिबंध स्वरुप सवर्ण युवती की अहं एवं जातीयता बोध उठ ख्रड़ा होता है। कहानीकार ने यहाँ कलाकार की संवेदना को मुख्ररित किया है। व्यक्ति जिस बाहरी रुप सौंदर्य पर आकर्षित होता है वह तो क्षणिक है और क्षणभंगुर है, शाश्वत सौंदर्य तो मन का, विचार का, व्यक्तित्व के विविध पहलुओं का और उत्कृष्ट कार्यों में निहित होता है।

'बापू का संकेत' कहानी में 'पाप को घृणा करें पापी से नहीं' का उदार अहिंसावादी सिद्धांत प्रस्तुत कहानी में है। प्रस्तुत कहानी में चोरी करनेवाले को माफी और दो रुपये देते हुए कथानायक ने गाँधीजी के महान आदर्श का पालन किया है। इससे उस आदमी में सुधार लाने में कथानायक सक्षम होता है। रामलाल नामक एक सुनार कथानायक के बरामदें में बैठा, उस की बेटी की टूटी माला को जोड़ रहा है परंतु बड़ी चतुराई से माला के तीन टुकडे करके एक को अपनी झोली में रख्र लेता है। कथानायक की दृष्टि बापू के चित्र पर पड़ती है जिससे प्रेरित होकर वह सुनार को उनकी मेहनत के दो रुपये देकर विदा करता है। कथानायक का यह अहिंसात्मक आचरण स्वर्णकार को ग्लानि, प्रायश्चित और अपराध बोध की आग में पाँच साल तक जलाता है। दूसरे लोगों द्वारा सोनार चोर पुकारने से व्यथित होकर उसने अपने कुकृत्य की स्वीकृति द्वारा प्रायश्चित कर लिया। कथानायक के अहिंसक विचार से उसकी पापवृत्ति समाप्त हो गयी। उसके कथन है - "मैं आज झूठ नहीं बोलता, अन्याय नहीं सोचता, नहीं करता, स्वार्थ बिलकुल छूट गया है मगर लोग अब भी मुझे सुनार चोर ही छिपे-छिपे पुकारते हैं। सबसे अधिकार चोर हूँ उनी दृष्टि में जो मेरे जैसे सुनार का काम करते हैं। इस दुःख से बाबूजी! मैं हरदम जला जा रहा हूँ।"

'अब कलयुग है' कहानी में मनुष्य के करतूतों से भगवान भी व्याकुल है। चिंताधीन है। भगवान की निंदा करनेवाले को राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कार प्राप्त हो जाता है। तभी भगवान पहचान लेता है कि यह कलयुग है। 'अब आप मकान बदलिए' कहानी में कहानीकार को भूत-प्रेतों पर अटूट विश्वास है। जबकि आज के भौतिकवादी युग में ये समस्त बातें सारहीन ही प्रतीत होती है। लेख्रक ने एक प्रेतात्मा को पात्र के रुप में व्यक्त करके मकान के किरायेदार प्रबोध को आकर्षित होने के वृतांत को मनोरम रुप में व्यक्त किया है। दूकानदार द्वारा इस रहस्य का उद्घाटन भी करवा दिया है कि वह रमिणी नारी रुप नहीं अपितु कुछ वर्ष पूर्व मृत लडकी है। मकान इसलिए कोई किराये पर नहीं लेता क्योंकि इसमें प्रेतात्मा का निवास है। इससे स्पष्ट होता है कि कहानीकार का भूत-प्रेत पर विश्वास है।

'बेचारा नक्सल' कहानी में जीवन की विषमता का चित्रण है। जिस आदमी को कथानायक नक्सलवादी मानकर अपने परिवार से दूर रख्रता है। वह अंत में उसके बच्चे का रक्षक बनता है। तभी यह भी पता चलता है कि असल में नक्सलवादी वह आदमी नहीं, जो स्वयं कथानायक का बेटा है।

निष्कर्ष के रुप में हम कह सकते हैं कि डॉ.नायर जी की कहानियों की विशेषता यह है कि कहीं भी भारतीयता ह्रास न नहीं हुआ है। उनकी दृष्टि सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शों पर केन्द्रित रहती है। डॉ.नायर जी का समस्त जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए समर्पित है। कहानीकार एक ओर अपने चारों ओर व्याप्त कुंठा, भ्रष्टाचार एवं मूल्य-विघटन को अपने व्यंग्य का लक्ष्य बनाते हैं तो दूसरी ओर सांस्कृतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर आस्था व्यक्त करते हुए आज के मनुष्य के विघटित व्यक्तित्व को ऐतिहासिक चेतना की अख्रंडता से समन्वित भी करते हैं।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
भारत महाविद्यालय, जेऊर(म.रेल), तह-करमाला,
जि-सोलापुर(महाराष्ट्र) मो.०९६५७२४०५५४

हिन्दी को समर्पित एक कर्मयोगी

रज़िया बेगम

डॉ. चन्द्रशेखरन नायर बहुत ही सहज, सरल, मृदुभाषी और मिलनसार व्यक्ति हैं। इतना विपुल साहित्य सृजन, इतनी ख्याति और इतने सारे सम्मान, पुरस्कारों के बावजूद अहंकार उनको छू भी नहीं पाया है।

यूँ तो उनसे मेरी औपचारिक मुलाकात अभी तक नहीं हो पायी है किन्तु आधुनिक तकनीकि विकास के फलस्वरूप आविष्कृत दूरभाष ने सुदूर बैठे व्यक्तियों से सम्पर्क का जो अवसर उपलब्ध कराया है इसके लिए विज्ञान को साधुवाद देना तो फर्ज बनता ही है। विज्ञान के इसी चमत्कार के सहयोग से चन्द्रशेखरन नायर जी से मेरी अब तक मुलाकात होती रही है। उनसे मेरी बातचीत महज संयोग नहीं थी। साहित्य प्रेमी होने की वजह से नायर जी के कुछ आलेख मैंने यत्र-तत्र पढ़े थे। किन्तु उनसे मेरी कोई बातचीत नहीं हुई थीं। दक्षिण भारत में अध्ययन और फिर अध्यापन के कारण मुझे उनको और उनके साहित्य को जानने समझने का अवसर मिला। ऐसे में जब मुझे अतिथि संपादक का दायित्व निभाने का अवसर मिला तो मुझे लगा केरल के प्रख्यात साहित्यकार नायर के व्यक्तित्व और कृतित्व को साहित्य-समाज के सामने प्रस्तुत करूँ। सृजनलोक की भावना भी रही है कि सृजनलोक सिर्फ हिन्दी भाषी लोगों और क्षेत्र की पत्रिका भर बनकर ना रह जाये। मैंने देखा कि सृजनलोक अपने प्रत्येक अंक में भारतीय भाषा के साहित्य के अनुवाद और अहिन्दी भाषी हिन्दी लेखकों की रचनायें प्रकाशित करता रहा है ताकि पत्रिका हिन्दी प्रदेशों और अन्य प्रोतों के बीच भाषायी खाई को पाट सके तथा एक दूसरे के भाषा-साहित्य और संस्कृति को समझने में मद्द्गार हो।

इसी क्रम में मैंने कई अहिन्दी प्रदेश के लेखकों की रचनाएँ सृजनलोक में प्रकाशित की जिसमें प्रमीला के.पी., मधु धवन, लक्ष्मी अय्यर, वरिष्ठ साहित्यकार इंदरराज वैद्य, निर्मला मौर्य जैसे दक्षिण भारतीय साहित्यकार शामिल हैं। नायर जी को पढ़कर मुझे उनका व्यक्तित्व बहुत ही अप्रतिम जान पड़ा। और गाँधीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का भी एक नया आयाम मेरे सामने उभर आया और लगा कि वे कितने दूरदर्शी थे। और तब उनकी प्रासंगिकता और भी ज़्यादा महसूस हुई।

राष्ट्रीय आन्दोलन में तो उनके योगदान से सभी परिचित हैं। उनके दर्शन और सिद्धान्त को भी पूरी दुनिया जानती है। सच कहे तो विवेकानन्द के बाद किसी भारतीय लाल ने भारत-भूमि के सीमाओं से बाहर अगर भारत की प्रतिष्ठा स्थापित की है तो वह निःसन्देह गाँधी ही थे। यह सब मैं चन्द्रशेखरन नायर को पढ़कर जान पायी कि गाँधी जितने उत्तर के थे उतने ही दक्षिण के भी। और उत्तर और दक्षिण को एक सूत्र में पिराने का काम यदी किसी ने किया तो महात्मा गाँधी ने!

आप लोगों को लग रहा होगा कि मैंने बात शुरू तो नायर जी से की और आ गयी गाँधीजी पर। पर मैं विषयान्तर नहीं हुई हूँ। मैं सिर्फ यह बताने की कोशिश कर रही थी कि हिन्दी को राष्ट्रव्यापी भाषा, जनभाषा बनाने का जो संकल्प गाँधीजी ने लिया था दक्षिण में उसने कितने और गाँधी उत्पन्न किये। और मैं कहूँ कि नायर जी उनमें से ही एक हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी! नायर जी ने अपने जीवन के ७०-७२ वर्ष गाँधीजी की प्रेरणा से हिन्दी की सेवा को समर्पित कर दिये। गाँधीजी का उनके व्यक्तित्व पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि उन्होंने खादी का वस्त्र पहनना प्रारम्भ कर दिया, चरखा चलाना, सूत काटना आरम्भ कर दिया। मांसहारी भोजन करना छोड़ दिया। उनके आचार, विचार और व्यवहार में गाँधी इस कदर रच बस गये कि उनकी विचारधारा, दर्शन और जीवन गाँधी से एकात्म हो गयी। इसका प्रभाव उनकी रचनाओं पर दिखता है। उनकी रचनाओं के पात्र उच्च वर्गीय या अभिजात्य वर्ग की नहीं है वरन निम्नवर्गीय, शोषित दलित वर्ग ही है। उनकी कहानी चमार की बेटी, काठ का कफन इत्यादि ऐसी ही कहानियाँ हैं। उनके नाटक भी राष्ट्र और समाज के हितों की स्थापना की कामना के ही परिणाम हैं।

साठ से अधिक पुस्तकों के रचयिता डॉ.नायर हिन्दी के साथ, संस्कृत और मलयालम के भी विद्वान हैं। तथा इन भाषाओं में मौलिक रचनाओं के अतिरिक्त अनुवाद कार्य भी किया है।

गाँधीजी की तरह ही धर्म में इनकी गहरी आस्था है। किन्तु धर्म को वे दीन-दुखियों की सेवा, आत्म परिष्कार और मानवता के उत्थान का निमित्त मानते हैं उसके ढोंग-पाखंड और रुढ़ियों में नहीं भटकते। जीवन के घोर अभाव, कठिन जीवन को जीते हुए भी कभी गलत रास्ता नहीं अपनाया।

नायर जी जितना अपने विपुल साहित्य के लिए सम्मान्य हैं मेरे समझ में इसे कहीं ज्यादा में हिन्दी भाषा की सेवा के लिए सम्मान के पात्र हैं। दक्षिण भारत में केरल प्रांत में गाँधी के हिन्दी प्रचार से प्रभावित (जिसे गाँधी जी राष्ट्र सेवा और चेतना का प्रतीक मानते थे) किशोर नायर के मन में जो राष्ट्रभाषा और देशप्रेम की अलख जगी। आज ९० वर्ष के उम्र में भी उसी जोश और उत्साह के साथ हिन्दी सेवा के अश्वमेध यज्ञ में लगे हुए हैं। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की स्थापना और साहित्य अकादमी शोध पत्रिका का पच्चीस से अधिक वर्ष से निरन्तर संचालन इसी लगन और उत्साह का परिणाम है। डॉ.नायर इस उम्र में भी लगातार गोष्ठियों, सेमीनारों, कार्यशालाओं का उत्साह से आयोजन करते हैं। नये रचनाकारों, हिन्दी सेवियों को पुरस्कृत और सम्मानित कर उत्साहवर्द्धन करते हैं। ऐसे ही समन्वित प्रयास हिन्दी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिला सकते हैं।

मेरी कामना है कि वे इसी तरह हिन्दी की अनवरत सेवा करते रहें, युवाओं को प्रेरणा देते रहें। शतायु हों। उनके जोश-जज्बे को सलाम।

सहायक प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
एस.आर.एम.विश्वविद्यालय, कट्टनकलथुर, चेन्नई,
तमिलनाडु, मो: ०९३४५८४४६११

चिरजीव महाकाव्य : महाकाव्यों का महाकाव्य

डॉ. अर्जुन शतपथी

यह सर्व विदित है कि प्रत्येक जाति का अपना इतिहास होता है। प्रत्येक देश की अपनी एक विशेष संस्कृति होती है। प्राचीन काल में भारत को एक समृद्ध संस्कृति मिली है। संस्कृति की आत्मा देश का महाकाव्य मानी जाती है। भारतीय संस्कृति की आत्मा दो विश्व विख्यात महाकाव्य है - रामायण और महाभारत। ये महाकाव्य शाश्वतता के प्रतीक हैं। ये कालयजी कृतियाँ हैं। संभवतः इसके समान प्राचीन और समृद्ध महाकाव्य विश्व के और किसी देश की संस्कृति में नहीं है।

रामायण में भारतीय जीवन के संपूर्ण चित्र हैं। इसके जीवन के साथ अंतरंगता, आत्मा के साथ अनन्यता, देश, काल, भूगोल, इतिहास, लोक जीवन आदि के साथ एकात्मकता प्रमाणित है। ये ऐसे माहाकाव्य हैं जिन्हें न किसी परिभाषा में व्यक्त किया जा सकता है या न किसी दायरे में रखा जा सकता है। इनमें अनंत कथाएँ अनुस्यूत हैं, नाना प्रसंग जुड़े हैं। और इसके सभी तत्वों की प्रासंगिकता सभी कालों में होती है। इसकी व्याख्या का अंत नहीं है। तथ्य है जब एक मानव-सभ्यता धरातल पर विघमान रहेगी, तब तक यह भी स्वयं संपूर्ण तथा अक्षुण्ण रहेगा।

आचार्यों ने दो कोटियों के महाकाव्यों का निरूपण किया है। १. आलंकारिक महाकाव्य और २. विकसित महाकाव्य। अलंकारप्रधान महाकाव्य काव्य-शास्त्रीय परंपरा में श्रेष्ठ कृति मानी जाती है। यह स्वभाव से तद्धत् ही रहता है। विकासशील महाकाव्य में कथा का विस्तार होता रहता है। मूल कथा को अक्षुण्ण रखते हुए युगानुकूल प्रवृत्तियाँ उसमें स्थापित होती हैं। जिससे काव्य की प्रासंगिकता बढ़ जाती है। रामायण और महाभारत की मूल कथा इतनी सशक्त प्रभावी संवेदनायुक्त तथा महान हैं कि उसमें परिवर्तन की संभावना होती ही नहीं। परिवर्द्धन हो सकता है। तात्पर्य यह है कि काव्य का सर्व प्रमुख्र तत्व उसकी शैली है। महाकाव्य की शैली उदात्त होती है। रामायण और महाभारत की उदात्त शैली के सामने विश्व के अन्य सभी महाकाव्य निष्प्रभ हो जाते हैं।

डिवाइन कमेडि या पैराडाइस लौस्ट आदि पाश्चात्य महाकाव्य भारतीय महाकाव्य के समान व्यापक जीवन की आदर्श नहीं कर पाते हैं। न उनकी कथावस्तु महान है और न इसका प्रकरण प्रभावी है। सृष्टि प्रकरण पर आधारित ये महाकाव्य शाश्वत्य को छूने का प्रयास भर करते हैं, लेकिन भारत में महाकाव्य की परंपरा उससे भिन्न है। महान कथा की असीमता भारतीय महाकाव्य में सबसे पहला परिचय हैं रामायण की कथा एक होते हुए भी भारतीय भाषाओं में लगभग उस पर आधारित हज़ारों काव्यों का सृजन हुआ है। उसी प्रकार भारत के विविध प्रसंगों पर हजारों काव्य लिख्रे जा चुके हैं। कथा के उपर्युक्त विकास को देख्रते हुए आचार्यों ने इन्हें विकासशील काव्य कहा है।

हिन्दी में काव्य सृजन का श्रीगणेश महाकाव्य से हुआ, ऐसा कहा जाय तो शायद ही अत्युक्ति होगी। आचार्यों ने महाकाव्य के लक्षणों का उल्लेख भी किया है। उसकी जितनी शर्तें हैं उनका पालन करना जितना कठिन है उतना ही बहुआयामी है। महाकाव्य की कसौटी पर ख्ररा उतरनेवाला विख्यात काव्य कवि चन्दरबरदाई का पृथ्वीराज रासो महाकाव्य है। यह शैलीप्रधान आलंकारिक काव्य है। इसमें दोनों काव्यात्मकता और उदात्तता उच्चकोटि की है। इसका नायक भी महावीर है। महाकाव्य में चार प्रकार के नायक होते हैं। पृथ्वीराज में काव्यतत्व के सभी गुण विघमान हैं।

मध्यकाल का महाकाव्य गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस है। इसकी प्रबन्धात्मकता अद्भुत है, कथा संयोजन मौलिक है, शैली दोनों लोक और शिष्ट जनानुकूल उदात्त है। चरित्रों की योजना भी अभूतपूर्व है। इस महाकाव्य का नायक विश्व विद्धान है जिसमें तीन महान गुण हैं - शील, शक्ति और सौन्दर्य। यह गोस्वामीजी की रचनाशीलता की शाश्वतता का प्रतिपादित करता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में सृष्टि प्रकरण वैसी महान कथा वस्तु पर आधारित महाकाव्य 'कामायनी' है। महाकवि जयशंकर प्रसाद की यह अंतिम काव्य कृति है। इसमें भारतीय महाकाव्य के कुछ तत्व मिलते हैं। महाकाव्य के भले ही सभी लक्षण न मिलते हों, पर शैली और अंक कल्पना की दृष्टि से यह एक महाकाव्य है। हिन्दी के आचार्यों ने इसे महाकाव्य की मान्यता निःसंकोच प्रदान कर ग्रन्थ का गौरव बढ़ाया है। कामायनी की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसमें कथा की पूर्णता है और जीवन महाकाव्य के रूप में भरपूर उदात्त है।

हिन्दी महाकाव्य परंपरा में कुछ विद्धान महाकवि दिनकर के उर्वशी एवं कुरुक्षेत्र काव्यों को रखते हैं। किन्तु कथा, भाषा शैली आदि की दृष्टियों से ये काव्य ही हैं। पुरुरवा और युधिष्ठिर दोनों धीर प्रशांत और धीर ललित नायक होने पर भी कथा महाकाव्यात्मक नहीं है अर्थात् व्यापकता का अभाव है। मध्यकालीन महाकाव्य के रूप में सूर सागर को भी कुछ लोग स्वीकार करते हैं और कई विद्धानों ने उसका सफल मूल्यांकन भी किया है। अस्तु, हिन्दी महाकाव्य की कोटि में हमारे विचार में उसे रखने से ग्रंथ का महत्व अवश्य बढ़ जाता है।

प्रस्तुत प्रसंग में एक बात उल्लेखनीय यह है कि उल्लिखित तीन प्रमुख्र हिन्दी महाकाव्य-पृथ्वीराज रासो, रामचरित मानस, कामायनी तीन कालों का प्रतिनिधित्व करते हैं। प्राचीनकाल की डिंगल भाषा में पृथ्वीराज रासो की रचना हुई है। मध्यकाल की काव्य भाषा अवधी में मानस एवं बीसवीं शताब्दी के दूसरे-तीसरे दशक में स्वीकृत ख्रड़ी बोली में कामायनी की रचना हुई है। समालोचकों के अनुसार आधुनिककाल में महाकाव्य रचना की संभावना नहीं रखी। इसके कई कारण हैं। धीरे धीरे ख्रण्ड काव्य की संभावना भी जाती रही। आधुनिक जीवन शैली, व्यस्तता, आधुनिकता, आदि के कारण इस काव्य का गांभीर्य भी समाप्त हो गया है।

कविता रचना करना जीवन की आवश्यकताओं में अन्यतम है। अतः न कवियों की संख्या घटी है न कविता करना बन्द हुआ है।

काव्य रचना के क्षेत्र में कई मतवादों का प्रवेश हुआ और कवियों का दायरा भी बढ़ा। आधुनिक जीवन में जहाँ एक ओर निःसंगता है, दूसरी ओर कवि विश्व नागरिक बन बैठा है। वह किसी सीमित दायरे या राष्ट्र का मामूली नागरिक नहीं है। उसके चिंतन का क्षितिज विशाल और व्यापक है। उसकी सोच वैश्विक है और वह जटिल संवेदनीयता से गुजरता है। इन सब के बावजूद महाकाव्य की संवेदना भी है और आज भी है, इसे कदापि अस्वीकार नहीं किया जा सकता है।

प्रश्न है, उल्लिखित महाकाव्य कब और कहाँ रचित हुए? बीसवीं शताब्दी में एक महाकाव्य रचित है और वह काशी में रचित है अर्थात् हिन्दी प्रदेश में। हिन्दी से विगत छह दशकों की अवधि में अपना क्षेत्र विस्तार करते हुए सारे देश को अपना लिया है। हिन्दी आज उत्तर प्रदेश या उत्तर भारत की भाषा नहीं है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी में मौलिक रचनाएँ हो रही हैं। हिन्दीतर भाषा-भाषी विद्वान, मौलिक रचना कर रहे हैं।

प्रस्तुत परिप्रेक्ष्य में हाल ही में एक महाकाव्य की रचना हुई है और वह भी हिन्दीतर भाषी केरल राज्य में। उसका नाम है 'चिरंजीव' महाकाव्य जिसके रचयिता हैं महाकवि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर। प्रस्तुत महाकाव्य के प्रकाशन से यह साफ प्रमाणित हो रहा है कि एक युग की समाप्ति हो गई और दूसरे युग का प्रारंभ हो गया। एक मलयाली महाकवि द्वारा हिन्दीतर भाषी केरल राज्य में एक श्रेष्ठ हिन्दी महाकाव्य की रचना नवयुग का संदेश लेकर आयी है, इसमें संदेह नहीं है।

'चिरंजीव महाकाव्य' भारत के अन्यतम महाकाव्य 'महाभारत' के एक श्लोक पर आधारित है। उक्त महाकाव्य की बाज मंत्र है,

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमांश्च विभीषणः
कृपः परशुरामश्च सप्तैते, चिरंजीवनः

ये सात महामनीषी अमर हैं। इन्हें मृत्यू स्पर्श नहीं कर सकी। वस्तुतः महाकाव्य, महाकाव्यों का महाकाव्य है। तात्पर्य यह है कि महाकाव्य का एक ही नायक होता है। कहा गया है - 'तत्रैको नायकः शूरः' किन्तु प्रस्तुत काव्य में सात नायक है, एवं प्रत्येक नायक सांस्कृतिक भारत वर्ष का शूरवीर है। सात महानायकों के जीवन पर सात काव्य हैं। चूँकि सात प्रकरण अनुसूत्रित हैं। इन्हें सात सर्ग कहा जाय तो महाकाव्य की सर्गबद्धता सिद्ध हो जाती है। सर्गबद्ध महाकाव्य यहाँ सार्थक हो जाता है। महाकवि डॉ.नायर जी ने हनुमान प्रकरण को छः अध्यायों में विभाजित किया। इस प्रकार संख्या की दृष्टि से इसमें तेरह सर्ग हैं जो इसे महाकाव्य का स्वरूप प्रदान करते हैं और महाकाव्य चरितात्मक प्रबन्ध होने के कारण अधिक से अधिक पात्रों को समाविष्ट किया जाता है। प्रस्तुत काव्य में १७६ पात्रों का संदर्भ मिलता है। भारतीय काव्य, महाकाव्य, वेद, उपनिषद तथा पुराणों में ये चरित्र अपना-अपना वर्चस्व बताए हुए हैं। उनका संस्मरण करना महाकाव्य की गरिमा है।

डॉ. नायर जी की सर्जनात्मकता और महाकाव्यीय संकल्पना अद्वितीय है। इतने सारे प्रसंगों का निर्वाह करना निःसन्देह दुःसह कार्य है, किन्तु डॉ.नायर जी ने अपनी परिणत आयु के परिपक्व अनुभव और कारयित्रीप्रतिभा द्वारा अत्यंत सफलतापूर्वक निर्वाह है। सब का जन्मवृत्तांत, व्यक्तित्व, कृतित्व अनुभवजन्य विचार, प्रदेय आदि का अति उत्तम काव्यात्मक ढंग से संयोजन करना कतई सामान्य बात नहीं है। प्रत्येक महान चरित्र के साथ उनका आत्मीय सरोकार अन्यत्र दुर्लभ है।

डॉ.नायर जी ने पूर्व पीठिका से महाकाव्य का श्रीगणेश करते हुए आगे आनेवाले संवाद का एक सुन्दर अनुभव प्रदान कर दिया है। काव्य का वातावरण तो बन जाता है, अपितु मानवता का मूल प्रश्न भी खड़ा हो जाता है - युद्ध और शान्ति यह महाभारत काल से असमाहित प्रश्न है। इससे महाकवि ने कहा है कि जो भी किया जाता है, जो भी होता है, उसके अंतराल में एक ही शान्ति है। शेष सभी निर्मित मात्र हैं। एक ही विराट पुरुष श्रीकृष्ण विराज रहे हैं चिरजीव कथा में एक मात्र वे ही कथा नियामक एक मात्र वे ही शुभ पर्यवसायी अंत में वह विश्वपुरुष घोषणा करते हैं।

"मैं इस आर्ष भूमि का आत्म तत्व हूँ ब्रह्म हूँ बना दूँगा अणु शक्ति का मानव मंगल रूप जगत को।"

यह कहना अनावश्यक है कि प्रस्तुत काव्य की कथावस्तु पूर्णतः सांस्कृतिक है। डॉ.नायर जी ने अपनी महती प्रज्ञा की प्रेरणा से कथा का चयन किया है और प्रत्येक कथा के साथ सांस्कृतिकता का संबंध है। कवि ने अनेक सांस्कृतिक ग्रन्थों का तात्विक अध्ययन करते हुए सार को ग्रहण किया है। उनको लम्बी सांस्कृतिक अंतर्यात्रा करनी पड़ी है और मार्ग में उन्होंने महाभारत, श्रीमद भागवत, महापुराण देवी भागवत, विष्णु पुराण, वाल्मीकि रामायण, अध्यात्म रामायण, ब्रह्माण्ड पुराण, आदि पावन ग्रंथ सागरों में अवगाहन करने का परम सुख पाया है। तात्पर्य यह है कि यह महाकाव्य भारतीय सांस्कृतिक वाङ्मय का निचोड़ है और यह महाकाव्य हमारी सांस्कृतिक चेतना को एक नया भावबोध प्रदान करता है।

चिरजीव महाकाव्य की भाषा में एक ऐसा अवबोध है कि पाठक आसानी से रम जाता है। महाकाव्यात्मक भाषा में ही महाकाव्य लिखा जाता था। दिल उनका इसमें बखूबी निर्वाह हुआ है। संस्कृत एवं संस्कृतनिष्ठ भाषा इसकी परिनिर्वाहित भाषा है। विषयनुकूल भाषा काव्य को गरिमा प्रदान करती है। जहाँ तक छन्द का प्रश्न है, यह प्रभावी मुक्त गद्य छन्द में रचित है। निराला के समय से इस गद्य छन्द को प्रसिद्धि मिली है, क्योंकि इसमें अभिव्यक्ति सौंदर्य पर्याप्त है।

एक प्रश्न और है। प्रत्येक महाकाव्य के संदर्भ में दो प्रश्न उठाए जाते हैं। १. काव्य रचना का उद्देश्य क्या है अथवा यह काव्य विशेष समाज को क्या संदेश देता है? २. महाकवि का अभिप्राय क्या है? यह सबको ज्ञात है कि महाकाव्य का उद्देश्य सदैव जन कल्याण है। यह "सर्व जन हिताय" होता है। पहले कहा जा चुका है कि डॉ. नायर एक असाधारण साधक है। ऋषिप्रतिम डॉ. नायर का प्रत्येक कार्य "सर्व जन हिताय" होता है। उन्होंने महाकाव्य का अभीष्ट सब से पहले इंगित कर दिया है। अद्यतनता की प्रवृत्ति हिंसा, द्वेष और विनाश की ओर है।

यह युग अणुयुग कहलाता है। एक ओर हिंसक मानव के हाथ में अपराजेय विनाशक अणुशक्ति है जो संहार का आवाहन कर रही है और दूसरी ओर निरीह मानवता है। इस भयंकर अंतर्द्वन्द्व के समय

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नवति-आचरण वर्ष भर के अंत में समापन सम्मेलन 24 दिसंबर 2013 को सबेरे 10 बजे से चलने का निर्णय हुआ है।

लक्ष्मीनगर डी-१ में निम्न कार्य-क्रम चलेगा

प्रार्थना - **श्रीमती रुग्मिणी रामकृष्णन**

स्वागत - **श्री. एन.वी.राजेन्द्रन**

अध्यक्ष - **श्री. टी.पी.श्रीनिवासन आई.एफ.एस**

उद्घाटन - **जस्टिस एम.आर. हरिहरन नायर**

मुख्य अतिथि - **महाकवयित्री श्रीमती सुगतकुमारी**

डॉ.चन्द्रशेखरन नायर - चित्रकला ग्यालरी का उद्घाटन

उद्घाटन - **डॉ. के.जयकुमार** (वी.सी.मलयालम वि.वि.)

अध्यक्ष - **श्री. काट्टूर नारायण पिल्लै**

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर पर रचित हिन्दी ग्रंथ का लोकार्पण

ग्रंथकर्ता - **डॉ. पंडित बन्ने** (महाराष्ट्र) ग्रंथपरिचय

लोकार्पण - **श्री. पी.गोपीनाथन नायर** (चेयरमेन, गाँधीस्मारकनिधि)

ग्रंथ स्वीकरण - **डॉ. एस.तंकमणिअम्मा**

डॉ.नायर का आदरण - **श्री. गोपीनाथन नायर**

मुख्य भाषण - **डॉ. सुधीर** (प्राचार्य एम.जी.कालेज)

आशीरवाद भाषण - **श्री.रामनपिल्लै**
श्री.के.एस.वासुदेव शार्मा
श्री.संगीतकुमार
श्री.सी. गोविन्दन ऐ.ऐ.एस.
श्री. आर्टिस्ट जी. हरि
प्रोफ.माधवनकुट्टिनायर
डॉ.वी.वी.विश्वम
श्री.के.राजेन्द्रन

आशंसागीत - **श्रीमती आर.राजपुष्पम**

कृतज्ञता - **श्रीमती एस. सुनन्दा**

सुहृदजनों का स्वागत - **सुनन्दा**

- राष्ट्रगीत -

संचालन - **डॉ.उषाकुमारी** (प्रोफसर, एम.जी.कालेज)

चिरजीव महाकाव्य : महाकाव्यों का महाकाव्य...

अपनी संस्कृति, विरासत, इतिहास आदि की ओर ध्यान देना समय की माँग है। युद्धविहीन शान्ति की आकांक्षा और कामना करना इस महाकाव्य का उद्देश्य है। कवि ने प्राचीन वाङ्मय से महान जन नायकों को चुनकर एक आदर्श की स्थापना की है। वे उनकी प्रेरणा चाहते हैं -

आज कलियुग के अणुयुग में; भाव रूप में वे पुराण पुरुष
अंतर आया है विपुलाधिक; देखें सह अस्तित्व वे देते हैं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में महाकवि सुमित्रा नन्दन पंत जी का 'लोकायतन' महाकाव्य प्रकाशित हुआ। प्रकाशन के पूर्व श्रद्धेय महाकवि पंत ने स्वयं शुरू से अंत तक स्थानीय (इलाहाबाद में) विद्वानों को काव्य पढ़कर सुनाया था। यह मेरा परम सौभाग्य है कि वहाँ मैं स्वयं भी एक श्रोता था। उक्त महाकाव्य का नायक अशरीरी लांक चेतना है जिसे महानायक कहा जा सकता है। प्रस्तुत काव्य में सात महानायक मिलते हैं। किंतु नियमानुसार एक ही नायक होना चाहिए। लोकायतन के आधार पर सोचा जाय तो चिरजीव महाकाव्य का भी एक ही सर्वमान्य नायक मेरे विचार में है - वह है भारतीय संस्कृतिक चेतना।

अंततः परम आदरणीय डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी को सश्रद्ध नमन करता हूँ। उनका अवदान चिर स्मरणीय रहेगा। उनकी कृति अमर तो रहेगी ही, अपितु वे स्वयं भी चिरजीवी होंगे, यही कामना है।

हिन्दी प्रोफेसर सेवा निवृत्त, आकाशवाणी मार्ग,
जगदा, राउरकेला - ७६९०४२

प्रख्यात साहित्य मनीषी एवं हिन्दी सेवी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साथ डॉ.एस.रजिया बेगम की बातचीत

गैर हिन्दी परिवेश में जन्म और शिक्षा-दीक्षा के बावजूद आप में हिन्दी के प्रति अनुराग कब और कैसे हुआ?

मैं मध्य तिरुवितांकोर के शास्तामकोट्टा नामक गाँव में पैदा हुआ ग्रामीण बालक था। माता-पिता सामान्य शिक्षा प्राप्त किसान परिवार के थे। शास्तामकोट्टा मलयालम स्कूल से १५ वर्ष की अवस्था में ७वाँ दर्जा पास किया। दो वर्ष बाद हमारे गाँव से १२ मील दूरी पर के.राघवन नामक एक हिन्दी प्रचारक हमारे गाँव आये, हिन्दी पढ़ाने लगे। हिन्दी भाषा के साथ हमारे देश का सच्चा संबंध उन्होंने समझाया, गाँधीजी के संदेश को सुनाया कि हिन्दी पढ़ना-पढ़ाना देश सेवा है। गाँधीजी के प्रति अमित आकर्षण रहा था। देश की जनता गाँधीजी का आदर करती है। अंग्रेजी यजमानत्व को निर्मूल करने में हिन्दी भाषा और स्वदेशी चीज़ों को अपनाना एक मार्ग है।

यही भाव साफ-साफ मालूम हुआ। तभी युवत्व का उस ओर जाने की उन्मुखता तीव्र हो गयी। हिन्दी पढ़ने लगा, बिलकुल एक अजनबी भाषा। उसे पढ़ने से उस समय किसी प्रकार की लाभकारी बात दूसरी नहीं थी। पर आशंका मौजूद थी की अंग्रेजी सरकार की दृष्टि में हिन्दी पढ़ना एक प्रकार से देशद्रोह था। हमारे गाँव के लोग नहीं जानते थे कि हिन्दी क्या चीज है। व्यर्थ समय गंवा देने का एक फिजूल कार्य। देश के प्रति प्रेम अथवा कर्तव्य इस प्रकार के आशय से सर्वथा मुक्त। इस सर्वथा विपरीत परिस्थिति में हिन्दी पढ़ी। विरोध संघर्ष हुआ। मास्टर को मारने का कार्य-क्रम चला था।

आपने स्वतंत्रता आंदोलन देखा है, पराधीन भारत की आँखों में तब क्या सपने थे?

पराधीनता मरने से भी बढ़कर अशुभकारी है। अंग्रेजी शासन की स्थिति उससे भी कठोर अनुभव थी। गाँधीजी ने अहिंसात्मक आंदोलन अपनाया। एक नया एवं बिलकुल अनोखा युद्ध संकल्प। बात तो सही थी। पर वह दुर्बल एवं बेपरवाह का रास्ता नहीं। पर, भारतीय जनता गाँधीजी के विचारों और समरमार्ग से तन-मन से कष्ट-सहिष्णु बनी थी। फिर भी उनके अनुयायी होकर रहने में हिचकती नहीं थी। स्वाधीन होने की उत्कट अभिलाषा के कारण वे महात्मा पर अपना जीवन समर्पित करते रहे। इस दिशा में हिन्दी पठन और प्रचरण भी पूरे उत्साह से चला।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन ने युवा चन्द्रशेखरन नायर के मन को किस प्रकार प्रभावित किया था?

चन्द्रशेखरन नायर ने जिस उद्देश्य के बल पर हिन्दी को अपनाया था वह देश के प्रति कर्तव्य निर्वहण के पक्ष में था। देशीय सांस्कृति पर आस्था बनाये रखना और धार्मिक एवं पौराणिक ग्रंथों के पठन और उनके भावों को जीवन और विचारों में लगाये रखने की स्थिति तक सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुंच चुका था। अध्यात्म रामायण का अध्ययन एवं पाठ करीब सौ से ज्यादा आवर्तन कर चुका था। कोई न कोई कविताएं भी लिखने का साहस कर चुका था। गाँधीजी से पूरा भक्ति भाव रहा था। स्वदेशी चीजों पर आश्रित रहने का व्रत किया। खादी पहनना शुरू किया और इसका प्रचार भी करने लगा था। खादी भण्डार से स्वीकार कर बाहर बेचने लगा था। शाकाहार का आदी हो गया। तकली पर से सूत निकालता और चरखा खरीदा, उसका उपयोग करता। इस प्रकार तत्कालीन गाँधी विचारधारा का पक्का कायल बना रहा।

स्वतंत्रता पूर्व और स्वतंत्रता के पश्चात से वर्तमान तक भारत की सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य में क्या परिवर्तन देखते और महसूस करते हैं?

स्वतंत्रतापूर्व भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में हुए परिवर्तन का अंदाजा करना एक महा निबंध का कार्यवृत्त है। संक्षेप में याने दो चार शब्दों में ही यहाँ बताना उचित मालूम होता है। वस्तुतः भारतीय समाज व्यवस्था, राजनीति अब तक की प्रोन्नति आदि स्वाधीनता के पश्चात् ही आगे बढ़ी है। अनेकों वर्ष की पराधीनता में रही जनता स्वातंत्र्य पाकर यद्यपि प्रसन्न हो फिर भी असंख्य आंतरिक झमेलों में फँसी हुई रही थी।

हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष का सामना करना पड़ा। देश के भीतर के स्वतंत्र राज्यों को देशीय धारा में लाना था। देश की संपत्ति सारी विदेश गई हुई थी। दरिद्रता को पाटना था। बँटवारे के साथ हुए सामाजिक एवं मजहबी संघर्षों का निबटारा भी करना था। साथ ही नये संविधान के साथ देशीय सरकार की स्थापना भी करनी थी। इन अनंत समस्याओं के बीच देश सचमुच का दम घुट रहा था। इन्हीं दुविधाओं के बीच गाँधीजी का शहीद होना भी एक ज्वलंत प्रश्न था। आश्चर्य की बात है, ऐसी एक मर्मभेदी परिस्थिति में भी भारत का स्वतंत्र शासन कायम रहा। नये सिरे से प्रत्येक प्रश्न का प्रत्येक सवाल का उचित जवाब देना हमारे लिए कठोर परिश्रम का कार्य था।

देश का नियम बना। नियम के मुताबिक शासन की व्यवस्था हुई। कन्याकुमारी से लेकर काश्मीर तक का स्वतंत्र भारत सरकार बनी। इसके सहायक होकर असंख्य नियमज्ञ सामने आए। असंख्य

शक्तिशाली व्यक्तित्व सामने उपस्थित हुए तभी भारत सरकार का स्थापत्य बन सका। फिर भी, पराधीनता में से परिचित विद्वानों में विभिन्न आशायों का आविर्भाव हुआ। राजनैतिक दल बंदी के आविर्भाव से देश के सच्चे हिकांक्षियों में वैषम्य की अवधारणा स्थाई होकर बन गई। जनता भारत की है, लेकिन विश्वास परदेशों और परधर्मी से है। इन विरुद्ध भावों का संघर्ष ही आज लोकसभा एवं राज्य सभा में बराबर होते रहते हैं। हम अपने संविधान के अनुपालन में अक्षम एवं असमर्थ हो चुके हैं। बार-बार शासनों का बदलना हमारा स्थाई स्वभाव हो चुका है। फलतः देश की समग्र प्रोन्नति में हम सफल नहीं बनते हैं। आजकल सम्मिलित दलों की सरकार हमारे लिए स्वाधीनता के विघटन का स्वरुप ही दर्शता है।

आपने किस प्रेरणा से हिन्दी प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया?

मैंने जब हिन्दी पढ़ी तब स्वयं को नहीं देखा था बल्कि देश को देखा था। इस रास्ते के मार्गदर्शक रहे थे महात्मा गाँधी।

हिन्दी प्रचार-प्रसार के क्रम में आपने गाँव तक में प्रचार कार्य किया, आपने भारतीय ग्रामीण समाज को नजदीक से देखा है, आजादी के बाद से ग्रामीण समाज अब तक कितना बदला है?

चार-पाँच वर्ष तक याने बीस वर्ष की उम्र तक हिन्दी का प्रचरण कार्य किया। घर के आसपास के गाँवों तक मेरा कार्य क्षेत्र रहा था। वयस्क स्त्री-पुरुषों को भी हिन्दी के अभ्यास से प्रबुद्ध कर दिया और इस रास्ते से गुरु-शिष्य संबंध में सद्भाव, स्नेह, सौमनस्य और सौहार्द्र का लय विराज रहा था। हिन्दी के माध्यम से मुख्य धारा रही थी देश और उसकी संस्कृति की सुरक्षा। आज आँखों के सामने आशातीत अद्भुत परिवर्तन ग्रामीण समाज में आ चुके हैं। एक समय था जब कि गाँव-जनपद अपने पैरों से शहर तक जाते रहे थे। इस प्रकार होकर असंख्य गाँव छोटे बन गए और शहर बढ़ते गए, आबाद होते रहे। आज अख़बारों, मोबाइलों, टी.वि., कम्प्यूटर, लापडॉप आदि नवीनतम अलंकृत संपत्तियों के द्वारा जनपद और शहर में कोई अंतर ही नहीं रह चुका है। दस वर्ष की बालिका भी अपने हाथ के मोबाइल से दुनिया भर के साथ संपर्क स्थापित करती है और अपने जवान आयु की पहचान करती है।

आजादी के समय के नेता और आज के नेता में क्या फर्क देखते हैं?

आजादी के और आज के नेताओं में अंतर तो अवश्य है, फिर भी नेताओं का होना भी एक अपेक्षित कार्य तो है। पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, भुलाभाई देशाई, मदनमोहन मालवीय जी, पंजाब केसरी, सरदार वल्लभभाई पटेल, बालगंगाधर तिलक, दादाभाई नौरोजी, सुभाषचन्द्र बोस, इन्दिरा गाँधीजी, डॉ.अंबेदकर, रानी लक्ष्मीबाई, ई.एम.एस.नंबूतिरिपाड़, ई.के.नायनार, श्री.पट्ट्मनायक पिल्लै जैसे मेधावी राजपुरुष आज नहीं है, फिर भी आज भारत के शासन की बगडोर हाथ में लिए आदरणीय सोनिया जी, सर्वश्री मनमोहन सिंह जी, वाजपेयी जी, आडवाणी जी, मोदी जी जैसे देशीय नेताओं का स्थान गौण नहीं है। प्रत्येक दल का अपना अस्तित्व और आदर्श होता है।

आपके साहित्य कार्य पर राजनैतिक विचारधारा का कितना प्रभाव पड़ा?

मेरा साहित्य अत्यधिक विस्तृत एवं व्यापक धरातल पर आधारित है। मेरी कविताओं, नाटकों, कहानियों, उपन्यास, निबंधों, समीक्षाओं का संतुलन राजनैतिक गतिविधियों के तुला पर जुड़ा हुआ है। यह एक विस्तृत प्रबंध का विषय है। उत्तर के अनेक मूर्धन्य साहित्यकार मेरे साहित्य की तुलना उत्तर के राजनैतिक चित्रणों के अधिकारी एवं राजनैतिक साहित्यकारों के साथ की है। एक उदाहरण से इस प्रश्न का समाधान यहाँ अंकित होता है। मेरठ के डॉ.नत्थन सिंह ने मेरी जीवनी का नाम 'केरलीय प्रेमचन्द डॉ.एन.चन्द्रशेखरननायर' दिया है।

साहित्य सृजन के लिए एक लेखक को किन चीजों के प्रति प्रतिबद्ध या जवाबदेह होना चाहिए?

साहित्य जन का हितहारी है। माने, साहित्य मानव का होना चाहिए, मानव के लिए होना चाहिए। इस अर्थ में साहित्यकार को अपने आसपास के जीवन को संपूर्ण दृष्टि से देखने का सद्भाव जितना हो उतना ही अपने राष्ट्र के समग्र अन्नयन पर भी होना चाहिए।

किस हिन्दी साहित्यकार का प्रभाव आपके मन पर सबसे ज्यादा पड़ा?

प्रारंभिक दशा में कबीरदास का प्रभाव इतने ठोस रूप से पड़ा था कि मैं सुप्रसिद्ध देवालय के सामने भी हाथ नहीं उठाता था। जबकि कबीरदास का वचन था, "तेरा साई तुझमें ज्यों पुहुपन में बास" उसका प्रभाव आज भी मुझ पर है। पर उसका आश्रय भगवत्गीता और उपनिषद् हैं।

हिन्दी के अलावा अन्य किसी साहित्यकार ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया? आपकी प्रिय पुस्तक कौन सी है?

भगवान व्यासदेव और कवींद्र रवींन्द्रनाथ ठाकुर मेरे लिए गुरु तुल्य रहे थे। मैंने उनपर गद्य कवितायें एवं लेख अनेक लिखे।

आप की प्रिय विधा कौन-सी है?

मेरे लिए सभी विधायें प्रिय एवं सुगम हैं। काव्य भी काफी लिख चुका हूँ। महाकाव्य भी उसमें आता है। हिन्दी और मलयालम में थी। मेरे परिचित और प्रभावित साहित्यकारों के अभिमत में मैं नाट्य रचनाकार हूँ। मुख्यतः कहानियाँ और उपन्यास लिखना मेरे लिए आनंद का विषय है। लेकिन अनुभव से बता सकता हूँ कि मैंने लाखों पृष्ठों पर का शोध कार्य किया है।

आपने सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा है, किंतु आपके नाटक अधिक लोकप्रिय रहे क्या कारण हैं?

कलाओं के सारस्वत संगम पर प्रतिष्ठित तीर्थपुरुष

डॉ. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन

कौन कहता है कि दक्षिण में हिन्दी का विरोध है? ऐसी सोच अंग्रेजों की औपनिवेशिक मानसिकता की उपज है। सच यह है कि आज हिन्दी राष्ट्रभाषा एवं राजभाषा से अंतरराष्ट्रीय भाषा की ओर सतत प्रवाहमयी बनी हुई है। केरल के कीर्तिपुरुष डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, चैन्नई के डॉ.बालशौरि रेड्डी, कर्नाट के पी.आर.श्रीनिवास शास्त्री, माधवराव सप्रे, हिन्दीसेवी संस्थाएँ प्राकाशित पुस्तकें एवं पत्र-पत्रिकाएँ, कोशग्रंथ आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर भारतीय हिन्दी के राष्ट्रीय क्षितिज पर उस देदीप्यमान सूर्य के रूप में उद्‌भासित है, जिन्होंने मलयालम, संस्कृत और हिन्दी में साहित्य की विभिन्न विधाओं में कालजयी कृतियाँ दीं, मलयालम एवं हिन्दी की विभूतियों को तुलनात्मक फलक पर रखा, केरल के हिन्दी साहित्य का इतिहास लिखा और उन्हें भारतीय साहित्य की कृतिधारा से सूत्रबद्ध किया। उन्होंने केरल की हिन्दी सेवा और साधना को व्यक्तिगत की अपेक्षा संस्थागत आकार दिया। आज वे केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवनन्तपुरम के सम्मानित अध्यक्ष हैं। उनके आभामण्डल में एक से एक नक्षत्र दीपित हैं। उनके कुशल नेतृत्व में सुनियोजित कार्ययोजना के तहत राजकीय-अराजकीय स्नेहिल सहयोग से केरलीय हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय आयाम मिला है।

डॉ. नायर की आरंभिक रचनाएँ हिन्दी नाटकों की हैं। द्विवेणी (१९६२ ई), कुरुक्षेत्र जागता है (१९६२ ई), सेवाश्रम (१९६५ ई), देवयानी (१७२ ई) आदि। डॉ.नायर का नाट्य साहित्य १९८२ ई) एक मूल्यवान कृति है। उन्होंने देशभक्ति की कविताएं लिखीं। हिमालय गरज रहा है (१९६५ ई), कविताएँ देशभक्ति की (१९९३ ई)। चिरंजीवी महाकाव्य (२९९८ ई) लिखा। हिन्दी कहानियां लिखीं-प्रोफेसर और रसोइया (१९६७ ई)। डॉ.नायर केरल के प्रेमचन्द के रूप में विभूषित हैं। उन्होंने निबंध मंजूषा (१९६६ ई) और केरल के हिन्दी साहित्य का बृहत इतिहास (१९८९ ई) भी लिखकर अपने बहुआयामी रचनात्मक व्यक्तित्व को आलोकित किया। वे देशभर की संस्थाओं से सम्मानित विभूति हैं।

डॉ. नायर साहित्य साधक ही नहीं, चित्रकर्मी एवं कला साधक भी हैं। वे काव्य कला और चित्रकला के सारस्वत संगम पर प्रतिस्थापित एक तीर्थपुरुष हैं। हिन्दी देवी-देवताओं के रूप निर्धारण में राजा रविवर्मा की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। उन्होंने चित्रकला सम्राट राजा रविवर्मा (२००४ई) की रचना कर भारतीय चित्रकला के इतिहास में एक अध्याय जोड़ दिया। वे स्वयं भी चित्रकार एवं छायाकार हैं। इससे संबद्ध इनके बहुत सारे लेख मलयालम और हिन्दी में प्रकाशित हैं। (ऐसी महान विभूति डॉ. नायर को सुरसरि का यह अंक दीर्घ जीवन की कामना के साथ समर्पित है। अंक कैसा बन पड़ा, आपकी प्रतिक्रयाओं की प्रतीक्षा रहेगी।) (सुरसरि विशेषांक से सधन्यवाद) ●

प्रख्यात साहित्य मनीषी एवं हिन्दी सेवी डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के साथ डॉ.एस.रजिया बेगम की बातचीत...

आपने सही कहा है कि मैंने सभी विधाओं में समान अधिकार से लिखा है। इसका यही कारण है कि मेरी नाट्य रचना 'देवयानी', 'द्विवेणी', 'सेवाश्रम', 'भगवान बुद्ध' आदि अनेक नाटक ऐसे प्रस्तुत हुए जिन पर असंख्य आधिकारिक जनों ने चर्चा-परिचर्चा की है और वह हिन्दी साहित्य के समग्र मंडल में परिव्याप्त हो चुका है। विधापरक भाषाओं के प्रयोगों में मुझे कोई अक्षमता कभी ममहसूस नहीं हुई है।

इस उम्र में भी सतत् सक्रिय रहने के लिए आपको किन चीजों से प्रेरणा और ऊर्जा मिलती है?

मुझे इस प्रश्न का क्या उत्तर देना पड़ रहा है। बालपन से ही मुझपर दैवी कृपा का प्रभाव अनुभव हुआ है। पराशक्ति श्री. मूकांबिका देवी ने जो कृपा मुझ पर सौंप दी है उसका स्मरण करने मात्र से मन में अविरल आनंद का अनुभव हो रहा है। इस नवति की अवस्था में भी मेरी कलम चलाने में उनके असीम कारुण्य का अवबोध दर्शित होता है। तीन महीने के पहले संपूज्य ग्रंथ श्रीमद्‌भागवदम एकादश स्कन्धम (मुक्तिस्कंधम) का मलयालम गद्यानुवाद धूमधाम से प्रकाशित कराया अनेक विद्वानों की उपस्थिति में। लेकिन देवी की सत्प्रेरणा जैसी लगती है कि निकट भविष्य में भी कुछ लिखूँ और प्रकाशित करूँ।

दक्षिण भारत में हिन्दी के इतने प्रचार के बावजूद आम आदमी में हिन्दी बोली और समझी जानेवाली भाषा के रूप में स्थान न बना सकी इसका क्या कारण है?

यह धारणा है कि दक्षिण में हिन्दी अधिक नहीं जानी जाती। यह धारणा निर्मूल है। हिन्दी जाननेवाले लोगों की संख्या आज उत्तर भारत से ज्यादा दक्षिण में है। जैसे केरल में ही देखिए, जितने शिक्षित लोग हैं याने कॉलेजीय शिक्षा से अभ्यस्त हैं उनमें 80% जन हिन्दी जानते हैं। क्योंकि स्कूल में हिन्दी सालांत परीक्षा तक अनिवार्य रूप से पढ़ाई जाती है। तमिलनाडु में भी हिन्दी की पढ़ाई स्कूलों और कॉलेजों में भी चलती है। असंख्य अकादमियों की कार्यशीलता चालू है। ●

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर
हिन्दी की प्रतिष्ठा के उन्नायक

अश्विनीकुमार आलोक

लेखक निस्संदेह अपने निजी परिवेश की अभिव्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, पर आंतरिक आकार सृष्टि के संपूर्ण उदार-संकोच का अर्थ पहचानने का प्रयास करता है। यह कला नवीन स्थापनाओं के भेद तो जानती है, परन्तु उसकी संवेदना आद्यंत एक-सी बनी रहती है। कला की स्थापनाओं में जीवन मूल्य और संभावनाओं की प्रतीति होती है। मनुष्य अपनी वांछाओं के अभिप्राय गांभीर्य भले न समझे, कलाकार जब कला का प्राकृतिक वैभव स्वयं में समेट लेता है तो उसे किंचित वांछाओं की विशद् व्याख्या का तर्क आता है। तभी वह अन्य मनुष्य की अपेक्षा अधिक उद्देश्यपूर्ण जीवन का आग्रही होता है। वह पूरा प्रयत्न करता है कि उसकी उद्भावनाएँ जीव-जगत के लिए साधुता का प्रतिबिंब लेकर उपस्थित रहें। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का सम्पूर्ण जीवन साधुता के सातत्य के लिए समप्रित है। लेखक, हिन्दी प्रचारक और विश्वबंधुत्व के प्रतिष्ठापक के रूप में वह जितने समादृत हैं, गाँधी जी की सामाजिक चेतना के उदात्त स्वरों का व्यावहारिक संकल्प लेकर आनेवालों में भी उतने ही अग्रणी है। दक्षिण भारत अपनी भाषिक और प्राकृतिक विभिन्नता के लिए जाना जाता है, तो उसी विभिन्नता में एकता के अनन्य सूत्र का भी उन्नयन हुआ है। एन.चन्द्रशेखरन नायर उन उन्नायकों में प्रमुख हैं, जिनका जीवन समर्पण के साथ इन कार्यों केलिए आज भी प्रतिबद्ध है।

हिन्दी प्रचारक के रूप में अपनी युवावस्था का उन्होंने आरंभ किया और अध्यापकीय सेवा में भी हिन्दी का सम्मान करते रहे। शोध निर्देशों में नये आकल्पों के संस्कार भरते रहे और इस प्रकार जीवन में सिद्धि प्राप्त की। इतनी महान सिद्धियाँ और साहित्यिक प्रवीणता ने इन्हें अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि दिलायी। हिन्दी और मलयालम में एक साथ मौलिक सृजन और अनुवाद कार्य करनेवाले चन्द्रशेखरन नायर की विलक्षण प्रतिभा ने अद्भुत प्रतिमान रचे। केरल ही नहीं, दक्षिण भारत के अन्य किसी प्रांत में यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी की हितचिंता का स्वर है तो उसकी निरंतरता में नायर जी की आत्मिक चेतना की अनुगूँज है। वह गाँधी जी की उदारता से प्रभावित रहे, इसलिए गाँधी जी की मान्यताओं को शिष्टतापूर्वक आत्मसात किया। उन्होंने भारतीयता की रक्षा का लेखकीय संकल्प लिया और सांस्कृतिक तेजस्विता की अभिरक्षा में अपना सर्वस्य समर्पित कर दिया। उनका नाम न सिर्फ दक्षिण भारत में, बल्कि उत्तर भारत में भी सामाजिक हित के प्रहरी के रूप में विख्यात है।

उन्होंने अपने लेखकीय जीवन का आरंभ नाटक लेखन से किया। परन्तु प्रायः सभी विधाओं में लिखा। इस प्रकार, उत्तर भारतीय लेखकों में हिन्दी भाषा की सभी विधाओं का विकास बिन्दु जिस तरह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के लेखन से आरंभ माना जाता है, दक्षिण भारत में हिन्दी साहित्य की विधाओं के प्रथम पुरुष के रूप में चन्द्रशेखरन नायर का लेखन क्रोशशिलात्मक है। १९६२ में प्रकाशित होकर आया उनका नाटक 'द्विवेणी' बहुशः प्रशंसित हुआ। उसकी भूमिका लिखते हुए पद्मश्री शूरनाड़ कुञ्जनपिल्लै ने उनके लेखन की उदग्र भावभूमि और जीवन के मूल्यों के प्रतिष्ठापन में उनके अद्भूत जैविक सामंजस्य को महत्वपूर्ण बताया था। परन्तु उनके नाटकार की प्रतिष्ठा और उज्ज्वल हुई उसी वर्ष प्रकाशित नाटक संग्रह 'कुरुक्षेत्र जागता है' से। इस संग्रह के तीन नाटक मानवीय आदर्शों की अभिरक्षा के सैद्धांतिक प्रयास भले करते दिखें, पर उनमें लेखक के व्यावहारिक आवेगों के आसन्न ही पात्रों का चारित्रिक उद्दीपन व्याख्यायित हुआ। डॉ.महेन्द्र भटनागर ने इसकी भूमिका लिखी थी और इसका तीन भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ था।

१९६४ में प्रकाशित कथा-संग्रह 'हार की जीत' का भी कई भाषाओं में अनुवाद हुआ। नायर की कथाएँ परिवेश की विद्रूपताओं का निष्पक्ष चित्र खींचती हैं, प्रतिकार के रास्ते तलाशती हैं और निम्न वर्गों के उद्धार का आधार देखती हैं। सभी में अपने देश की संस्कृति कि विलक्षण संस्तुति होती है। परम्परा का मान होता है और समाजहित में प्रयोगों का अध्ययन होता है। रचनाकार एक साथ कई विधाओं के लिए अपने लेखकीय आग्रह प्रकट करता है, पर उसके स्वर की त्वरा एक ही रहती है। नायर जी के नाटकों में भी यही है। १९६४ में प्रकाशित और कई भाषाओं में अनुवादित 'युग संगम' पुस्तक के नाटकों में समाज के छल और व्यभिचार के प्रति प्रतिरोधी स्वर उभरे हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षा के आह्वान और सांस्कृतिक अपघटन के प्रति आक्रोश प्रकट हुए हैं।

नायर जी देश के प्रति आस्थावान रहे हैं। असहाय और शोषितों पर उनकी दृष्टि रही है और भारतीय समाज की पुनर्रचना से जुड़ी गाँधीवादी चिंताओं के आसपास ही उन्होंने अपने समग्र रचनाकर्म के ताने बुने हैं। १९६४ में प्रकाशित गीत-संग्रह 'हिमालय गरज रहा है' देश के प्रति सर्वस्व न्योछावर करने और अजेय होने के आह्वान का प्रतीक बना। चीन आक्रमण के विरुद्ध भारतीयों के रक्त में उष्णता के संचार के लिए भारत सरकार ने इस रचना की एक हज़ार प्रतियाँ तत्काल ख़रीदी थीं।

१९६६ में प्रकाशित निबंध संग्रह 'निबंध मंजूषा' के उपयोगी आलेख कर्नाटक महिला विद्यापीठ के पाठ्यक्रम में सम्मिलित हैं। 'भारतीय साहित्य' में नायर जी की आलोचना पद्धति और सामासिक दृष्टि सामने

आती है। 'भारतीय साहित्य' में चार प्रसिद्ध हिन्दी रचनाओं पर नायर जी के विश्लेषण उनके समालोचक व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करते हैं। 'सेवाश्रम' का प्रकाशन १९६७ में हुआ। यह नाटक केरल हिन्दी प्रचार सभा जैसी कई संस्थाओं की पाठ्य पुस्तकों में लागू है। १९६७ में प्रकाशित 'भारतीय साहित्य और कलाएँ' में उन्होंने साहित्य और कला की नैष्ठिक एकाग्रता एवं परस्पर संबद्धता विवेचित की है। कई भारतीय भाषाओं में अनूदित और भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत नाटक 'देवयानी' नायर जी की प्रसिद्ध रचना है। कुछ आलोचकों ने 'देवयानी' को मंचीय दृष्टि के लिए समर्थ नहीं माना। परन्तु, साहित्य, विचार, समाज और मिथक के तर्कपूर्ण विवेचन के लिए यह कृति अत्यंत प्रसिद्ध हुई। वरिष्ठ उपन्यासकार एवं कथाकार विष्णु प्रभाकर ने लिखा है - नायर ने नाटक भी काफी लिखे हैं। रंगमंच की दृष्टि से वे भले ही सफल न हों, लेकिन कथावस्तु की दृष्टि से उनमें अद्‌भुत विविधता है। भावात्मक, सामाजिक, ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक सभी विषयों को लेकर उन्होंने अनेक विचारोत्तेजक नाटकों की रचना की है। 'देवयानी' उनमें अप्रतिम है। यद्यपि वह मंच पर उतनी सहजता से प्रस्तुत नहीं किया जा सकता, जितनी सहजता से आकाशवाणी पर प्रसारित किया जा सकता है। इसमें कथ्य ही कथ्य है। कार्यव्यापार नगण्य है और मंच पर कार्य व्यापार के बिना किसी भी नाटक की सफलता संदिग्ध हो जाती है। इस बहाने देवयानी की महत्ता कम नहीं हो जाती।

नायर जी ने बहुत लिखा। आरंभ से अब तक सेवाभावी हिन्दीव्रत धारण किये रहे। रचनाकर्म और मंचीय सक्रियता ने इस धारणा को निर्मूल कर दिया कि अहिंदीभाषी लोग हिन्दी में प्रवाहपूर्म लेखन नहीं कर सकते। उन्होंने कई लेखकों के लेख और मौलिक चिंतन की विवेचना कर स्वयं को आलोचक सिद्ध किया। सुमित्रानन्दन पंत और जी.शंकर कुरुप की प्रतीक योजनाओं में साम्य एवं अंतर पर उनसे पहले किसी ने नहीं लिखा था। भारतीय मर्यादा और काव्य-प्रवृत्तियों की समालोचकीय परीक्षा करनेवाले नायर जी समालोचक भी हैं, 'प्रोफेसर और रसोइया', 'चमार की बेटी' आदि कथाओं के माध्यम से समाज में प्रवृत्त विसंगतियों पर प्रहार करते हुए वह एक अन्यतम कथाकार भी सिद्ध होते हैं। 'हिमालय गरज रहा है', 'कविताएं देशभक्ति की' जैसी उम्दा कविताओं के लिए उन्हें कवि-श्रेष्ठ भी कहा जायेगा।

१९७२ में प्रकाशित प्रतीक : 'पूर्वी तथा पश्चिमी' जैसी रचना एकमात्र सिद्धांत साहित्य कही जाती है। अतः साहित्य में सिद्धांत संप्रेषण का प्रवर्तन करने के लिए भी वह महत्वपूर्ण हैं। प्रतीक कवि सुमित्रानन्दन पंत (शोध निबंध) पंत और जी. शंकर कुरुप (शोध निबंध) श्रेष्ठ सिम्बॉलिक कवि जी. शंकर कुरुप, हिन्दी और मलयालम के दो सिम्बोलिक कवि, धर्म और अधर्म, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नाट्य साहित्य, महर्षि विद्याधिराज तीर्थपाद, केरल के हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ.नायर की साहित्यिक रचनाएँ, गाँधी जी भारत के प्रतीक, निषाद शंका, बहुचर्चित कहानियाँ, एक कर्मयोगि की चित्ररथयात्रा, श्री. ललिता सहस्रनाम की व्याख्या, चित्रकला सम्राट राजा रवि वर्मा, डॉ.नायर जी का संपादकीय, केरल के हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास, चिरंजीव महाकाव्य, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर संवेदना और अभिव्यक्ति, डॉ.चन्द्रशेखरन नायर की लिखी अवतरणिकाएँ, गंगा और हरिद्वार, एक कर्मयोगी की आत्मकथा जैसी हिन्दी पुस्तकें उनके निरंतर लेखकीय व्यक्तित्व का प्रमाण है। मलयालम से हिन्दी में कई महत्वपूर्ण कृतियों का अनुवाद कर इन्होंने भारतीय एकता और सौमनस्यता के दीर्घजीवी प्रयास किये। ऐसी रचनाओं में अतीत के दिन (कंपी केशव मेनन), सीतम्मा महत्वपूर्ण हैं। हिन्दी से मलयालम में अनूदित कृतियाँ अतिथि सत्कार (डॉ.सरोजिनी महषी), गाँधीजी और लघु वीक्षणम (श्रीपाद जोशी), डॉ. चन्द्रशेखरन नायर की कहानियां विशेष चर्चित रहीं। अंग्रेजी में डेथ एंड रिस्सरक्शन, हिन्दी मलयालम अंग्रेजी कोश लिखकर इन्होंने विश्व साहित्य में हिन्दी और मलयालम की सघन अभिव्यक्ति के दर्शन कराये।

चन्द्रशेखरन नायर जितने बड़े लेखक हैं, सम्पादक के रुप में भी उतने ही निष्णात हैं। पत्रिकाओं एवं ग्रंथों में उनका उपयोगितावादी संपादक स्वरुप प्रकट होता है। ऐसी पत्रिकाएँ और संपादित ग्रंथ हैं - सरकारी हिन्दी प्रचारक पत्रिका, ग्रंथालोकम, मलविल्लु, गाँधी विज्ञान भवन सोवनीर, विनोबा भावे की जन्म शताब्दी सोवनीर, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध पत्रिका। चन्द्रशेखरन नायर एक बड़े चित्रकार भी हैं। इनके बनाये चित्रों की प्रदर्शनियाँ ख्याति प्राप्त करती रही हैं। 'राजा रवि वर्मा' पर एक विशिष्ट पुस्तक तथा कला-विमर्श के कई आलेख लिखकर कला-समीक्षक के रुप में भी प्रतिष्ठा अर्जित की। विपुल लेखन एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ में निष्ठापूर्वक योगदान पर सम्पूर्ण देश प्रफुल्लित है। देशभर के शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठनों तथा सरकारी संस्थाओं में अनेक पदों को इन्होंने सुशोभित किया। सलाहकार समितियों में रहे और अपने परामर्शों से दिशाएँ निर्धारित करते रहे। इनपर अब तक चार अभिनन्दन ग्रंथो एवं सात शोध निबंधों का प्रकाशन हो चुका है।

चन्द्रशेखरन नायर के अवदानों को देखते हुए यह धारणा निर्मूल सिद्ध होती है कि दक्षिण में हिन्दी के विरोधी लोग हैं। वस्तुतः अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा से दक्षिण के लोगों को समान रुप से स्नेह है। राजनीति और निजी लिप्साग्रस्त कुछ लोगों को देखकर यह अनुमान लगाना कतई उचित नहीं कि दक्षिण भारत हिन्दी के नाम पर अप्रसन्न होता है। २७ जून १९२४ को जन्में चन्द्रशेखरन नायर के पिता का नाम नीलकंठ पिल्लै और माता का नाम जानकी था। उन्होंने चित्रकला, भाषा और साहित्य के क्षेत्र में उच्चतर डिग्रियाँ अर्जित कीं। अध्यापकीय सेवा और लेखकीय व्यसन के बीच तादात्म्य स्थापित किया। दशकों से गांधीवाद और राष्ट्रहित की चिंता में लेखकीय प्रतिबद्धता के लिए विख्यात एन.चन्द्रशेखरन नायर वस्तुतः हिन्दी प्रतिष्ठा के उन्नायक के रुप में हमारे लिए अत्यंत आदर के पात्र हैं।

सम्पादक, सुरसरि, पत्रकार कालोनी, महनार,
वैशाली - ८४४५०६, मो. ०९८०१६९९९३६

बहुमुखी प्रतिभा के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार

डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

केरल के लब्धप्रतिष्ठ सारस्वत साधक डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति हैं। उदात्त देशप्रेमी, महात्मा गाँधी के अनुयायी, ख़ादी-व्रती, समर्थ चित्रकार, यशस्वी हिन्दी एवं मलयालम कवि, नाटककार, कथाकार तथा स्वनामधन्य साहित्यकार तथा कर्मठ कार्यकर्ता हैं। उनका प्रत्येक कार्य भारतीय संस्कृति की पूजा में अर्पित पुष्प है। उनकी सृजनधर्मिता की अंतर्धारा स्वयं में भारतीय संस्कृति की उदात्तता की उद्घोषणा करती है। नायर जी सच्चे अर्थ में भारतीय संस्कृति के प्रबल पोषक हैं। नायर जी के इस संस्कृति प्रेम ने उन्हें न केवल मातृभाषा मलयालम में साहित्य-सृजन की ओर प्रेरित किया है बल्कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी उच्चकोटि के रचनाकार बना दिया है। राष्ट्रभाषा हिन्दी में उनके सृजन कार्य ने उनकी सांस्कृतिक चेतना के वृत्त को बहुत विस्तृत किया है। इससे उनकी सृजनधर्मिता को एक नया आयाम भी प्राप्त हुआ है।

देशप्रेमी तथा भारतीय संस्कृति के उपासक

विद्यार्थी जीवन से ही देशप्रेम की उदात्त भावना की ओर डॉ.नायर उन्मुख हुए थे। उनके इस असीम देशप्रेम से जुड़े हुए हैं उनका राष्ट्रभाषा प्रेम तथा ख़ादी-व्रत।

महात्मा गाँधी के वे सच्चे अनुयायी हैं। वे गांधीवाद के सबल समर्थक भी हैं। गाँधी जी के सादा जीवन और उच्च विचार वाले आदर्श को अपने जीवन में अमल में लानेवाले कर्मठ कार्यकर्ता हैं डॉ. नायर। अपने लंबे अध्यापन काल में उन्हें आशातीत सफलता प्राप्त हुई है तो उसके मूल में उनका अप्रतिम संस्कृति प्रेम ही कार्यरत रहा है। आज केरल में ही नहीं, पूरे देश और विदेश में भी उनके अनगिनत शिष्यगण हैं जो अपने संपूज्य गुरुवर का सतत आदर एवं श्रद्धा से स्मरण करते हैं। डा.नायर जैसे सच्चे गुरु के लिए इससे अधिक संतोष की और क्या बात हो सकती है?

डा.नायर जी केरल के विविध सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक संगठनों से जुड़े हैं और उनका कुशल संचालन करने में संलग्न है। उनके सामाजिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्राण है भारतीय एकता। भारत की भावात्मक एकता को दृष्टि में रखकर ही आपने केरल हिन्दी साहित्य अकादमी जैसी महत्वपूर्ण संस्था की संस्थापना की है जो हिन्दीतर भाषी हिन्दी लेखकों को प्रेरणा-प्रोत्साहन देती है तथा हिन्दी के उत्कृष्ट साहित्यकारों को सम्मानित और पुरस्कृत भी करती आ रही है।

एक बहुचर्तित चित्रकार

हिन्दी के बहुत से पाठक कदाचित नहीं जानते कि डा.नायर एक समर्थ चित्रकार भी हैं। उन्होंने कई जलरंग और तैल चित्र बनाये हैं जिनमें अधिकांश बहुचर्चित भी हुए हैं। प्रकृति और पुरुष, सीताराम, गीतोपदेश, भगवान बुद्ध, विवेकानन्द आदि आपके ख्याति प्राप्त चित्र हैं। डॉ. नायर के चित्रकार व्यक्तित्व में भी उनकी उदात्त लोक मंगल की भावना भर कर आयी है। स्वयं कलाकार होने के साथ-साथ भारतीय और पाश्चात्य चित्रकला के वे अच्छे मर्मज्ञ भी हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकला के वे अच्छे मर्मज्ञ भी हैं। भारतीय एवं पाश्चात्य चित्रकला की बारीकियों और उसके विभिन्न पहलुओं पर आपके कई प्रमाणिक आलेख स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार

सुदूर दक्षिणी प्रदेश केरल में रहकर मातृभाषा मलयालम में ही नहीं, राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी अपनी प्रखर प्रतिभा का प्रसार करनेवाले हैं डा.नायर। मलयालम और हिन्दी में अथक साहित्य सेवा करके एक ओर वे दक्षिण और उत्तर को जोड़ने का सराहनीय कार्य करते हैं। तो दूसरी ओर तुलनात्मक अध्ययनों और अनुवादों के द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं और साहित्यों को परस्पर जोड़ कर भारत को एक सूत्र में बांधने का श्रमसाध्य कार्य संपन्न कर रहे हैं।

डॉ.नायर जी के सृजन संसार का वृत्त बहुत व्यापक एवं विशाल है। कविता, कहानी, नाटक, एकांकी, निबंध, समीक्षा आदि साहित्य की विविध विधाओं में आपने अपनी सफल लेखनी चलायी हैं। साहित्योतिहास प्रणयन तथा शोध के क्षेत्र में उन्होंने श्लाघनीय कार्य किये हैं। अपने व्यक्तित्व में अंदर्लीन सांस्कृतिक चेतना को खूब प्रस्फुटित होने का अवसर इस साहित्य सृजन ने उन्हें प्रदान किया है। डॉ.विजयेन्द्र स्नातक ने ठीक ही लिखा है कि श्री.नायर सच्चे आर्थों में हिन्दी भाषा के गौरवशाली वकील हैं, जो विवाद नहीं करेते, प्रतिद्वंद्विता खड़ी नहीं करते, सीधे और सहज ढंग से हिन्दी की गरिमा स्थापित करते हैं। राष्ट्रीय भावात्मक एकता का पथ प्रशस्त करते हैं। भाषाओं की दूरी मिटाते हैं। भारतीय सासंकृतिक एकता को सुदृढं बनाते हैं और दक्षिण तथा उत्तर भारत के बीच सेतु का काम करते हैं।

डॉ.नायर की समस्त कृतियाँ उनके संस्कृति प्रेम के निस्तुल निदर्शन हैं। हिन्दी और मलयालम में उनके पचास ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं तथा ३५० से अधिक रचनाएँ स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं। कई पत्रिकाओं व उत्कृष्ट ग्रंथों के संपादन का कार्य भी उन्होंने किया है।

ओजस्वी कवि

कवि के रूप में डा.नायर यशस्वी हैं। हिमालय गरज रहा है। उनका ख्यातिप्राप्त खण्डकाव्य है। किसी भी हिन्दीतर भाषी हिन्दी साहित्यकार के द्वारा विरचित यह प्रथम प्रबंधकृति है। इसमें कवि का उज्ज्वल राष्ट्रप्रेम व सांस्कृतिक प्रेम प्रकाशमान हो उठा है। चीनी आक्रमण की पृष्ठभूमि में विराचित यह कृति अपनी ओजपूर्ण भाषा

शैली के कारण विशेष आकर्षक बन पड़ी है। चिरंजीवी और अन्य कविताएँ में नायर जी की अनूठी कविताएं संकलित हैं। भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की सार्थक अभिव्यक्ति करने में उनकी कविताएँ सर्वथा सक्षम हैं। राष्ट्रीय गीतकार के नाम से वे जाने जाते हैं।

संस्कृति-पोषक नाटककार

हिन्दी नाटक क्षेत्र को डॉ.नायर की देन अनुपम है। एक विशिष्ट सांस्कृतिक आयाम प्रदान करके आपने हिन्दी नाटकों को महत्वपूर्ण भूमिका दी है। द्विवेणी, कुरुक्षेत्र जागता है, युग संगम, सेवाश्रम, देवयानी, धर्म और अधर्म आदि आपके नाटक हिन्दी सांस्कृतिक नाटक क्षेत्र की महत्वपूर्ण उपलब्धियां हैं। डॉ.नायर के सांस्कृतिक चिंतन का प्रस्पष्ट रूप इन नाटकों में परिलक्षित होता है। यही कारण है कि नायरजी की सांस्कृतिक उपलब्धियों की पहचान के लिए उनके नाटकों का सम्यक अनुशीलन नितांत अनिवार्य हो जाता है। डॉ. नायर के नाटकों में परिलक्षित भारतीयता को रेखांकित करते हुए हिन्दी के मूर्धन्य समीक्षक डॉ. नत्थन सिंह ने लिखा है - उनके सामने भारतीय आदर्शों की अभिव्यंजना का प्रश्न प्रमुख है, भारतीयता की रक्षा की भावना अधिक प्रिय है और साहित्य के माध्यम से लोक मंगल पोषक समर्थक एवं सबल मानव की प्रतिष्ठा का विचार अधिक प्रधान है... डॉ. नायर के अन्तस में भारतीय संस्कृति की गंगा प्रवाहित होती है। ये भारतीय पहले हैं और अन्य कुछ बाद में।

मानवीय आदर्शों के कहानीकार

हार की जीत, प्रोफेसर और रसोइया आदि डॉ.नायर के विशिष्ट कहानी संग्रह हैं। इन संग्रहों की अधिकांश कहानियों के कथ्य का सीधा सरोकार भी भारतीय संस्कृति तथा मानवीय आदर्शों की प्रतिष्ठापना से है।

मनीषी निबंधकार

उनके निबंध संकलनों और समीक्षा ग्रंथों (जिनकी सूची काफी लंबी है) में भी भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों की महिमा का गायन यत्र-तत्र-सर्वत्र हुआ है। भारतीय साहित्य, भारतीय साहित्य और कलाएं जैसे शीर्षक ही इस तथ्य के प्रस्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

डॉ.नायर का बहुचर्चित शोध प्रबंध हिन्दी और मलयालम के दो सिंबोलिक (प्रतीकवादी) कवि उत्तर और दक्षिण के दो महान कवियों की कविताओं के साम्य-वैषम्य के रेखांकन के साथ-साथ वैविध्य मतें एकत्व को संजोनेवाली भारतीय संस्कृति की अस्मिता का उद्घोषक भी है। कविवर पंत जी का यह कथन है कि वस्तुतः एक दक्षिणात्य विद्वान द्वारा रचित यह ग्रंथ हिन्दी साहित्य के लिए ही नहीं, अपितु समस्त भारतीय साहित्य के लिए एक विशिष्ट देन है।

महात्मा गाँधी, महर्षि विद्याधिराज जैसे जीवनी ग्रंथों के मूल में भी लेखक का संस्कृति प्रेम ही कार्य करता दिखाई देता है। समग्रतः विचार करने पर ज्ञात होगा कि डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की सृजनधर्मिता की अंतसलीला के रूप में प्रवाहमान भारतीय संस्कृति की उदात्त चेतना नायर जी की रचना धर्मिता को एक नूतन आयाम देने में सर्वथा सक्षम निकली है तथा नायर जी के साहित्य को राष्टचीय स्तर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित करने में भी समर्थ रही है। राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय कई पुरस्कारों से वे सम्मानित हैं, कई मानद उपाधियों से भी विभूषित हुए हैं। नायर जी की रचनाधर्मिता में परिलक्षित भारतीयता और सांस्कृतिक परिचिंतन इतना चर्चित हुआ है कि उनकी रचनाओं पर शोध कार्य करके डॉ. गोपाल जी भटनागर ने रीवा विश्वविद्यालय से पी.एचडी. की उपाधि प्राप्त की है। हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठ समीक्षक डॉ. नत्थन सिंह ने कुछ समय पूर्व ही भारतीयता के संरक्षक साहित्यकार : डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर शीर्षक उत्कृष्ट शोध प्रबंध की रचना की है। उस यशस्वी सारस्वत साधक के नाम पर दिल्ली से एक प्रौढ़ अभिनन्दन ग्रंथ भी समर्पित हुआ है। समकालीन भारतीय नाट्य साहित्य शीर्षक संदर्भ ग्रंथ का समर्पण करके उनके हितैषियों ने उनके प्रति आदर प्रकट किया है। भारत सरकार के कई मंत्रालयों की सलाहकार समितियों के वे सदस्य रहे हैं तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का एमेरिटस प्रोफेसर का विशिष्ट पद भी उन्हें प्राप्त हुआ है। तृतीय विश्व हिन्दी सम्मेलन में वे समादृत हुए हैं।

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय

ये भी शोध-पत्रिका के आजीवन सदस्य बने (११०)

नाम : **वी. आनन्दवल्ली**

जन्म तिथि : २८-२-१९४६, नेय्याट्टिनकरा, तिरुवनन्तपुरम

पति : श्री.एन.सुकुमारनकुट्टि

१९६८ से २००१ तक विद्यालय में अध्यापन। केरल हिन्दी प्रचार सभा की हिन्दी प्रचारिका। मलयालम की विविध पत्रिकाओं में कवितायें प्रकाशित। केरल ज्योति में हिन्दी कवितायें प्रकाशित। मलयालम में प्रकाशित 'बाष्पाञ्जली'। उसका हिन्दी में अनुवाद होनेवाला है। दो भक्तिगान सीडियाँ प्रकाशित।

मृदुलागर्ग की कहानियाँ - समकालीन समाज का दर्पण

डॉ. बिनु पयट्टुविला

सन् १९६० के बाद की कहानी को आमतौर पर समकालीन कहानी कहते हैं। समकालीन कहानी ने जीवन की सारी सच्चाइयों का चित्रण किया। आदमी की-ख़ासकर आम आदमी-की पूरी जिन्दगी कहानी में आ गयी। समकालीन कहानी जीवन की विषमताओं और विसंगतियों को प्रत्यक्ष करके सड़ी-गली व्यवस्था और भ्रष्ट आचरण को जड़मूल से उखाड़ फेंकने की सोच रखती है।

आजकल कहानी लेखन के क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा महिला रचनाकारों की उपस्थिति सक्रिय करती है। समकालीन कहानी की सशक्त लेखिका है - मृदुलागर्ग। वे अध्यापिका, नाटक-अभिनेत्री और समाज-सेविका के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके प्रकाशित कहानी-संग्रह 'डैफोडिल जल रहे हैं', 'टुकडा टुकडा आदमी', 'कितनी कैदें', 'ग्लेशियर से' और 'शहर के नाम' आदि हैं। इनकी कहानियाँ साधारण महिला कहानिकारों की भाँति नारियों के आँसू पोंछनेवाली नहीं हैं। वे नारियों को शोषण के प्रति जागरित करके उसे ललकारने का आह्वान देती है।

(१) मृदुलागर्ग की कहानियों में समाज : मृदुलगर्ग ने जो कुछ भी लिखा है वह समाज के उपेक्षित एवं शोषित वर्ग को ध्यान में रखकर ही लिखा है। सामाजिक विसंगतियों के प्रति सक्रिय भागीदारी ने मृदुलगर्ग को अधिक विद्रोहात्मक लेखिका बनाया है। अस्पतालों में मानवीय संवदना एवं मूल्यों का कोई महत्व नहीं है। वहाँ केवल अर्थ के आधार पर ही चिकित्सा उपलब्ध होती है। इसका विरोध उनकी 'अलग-अलग कमरे' कहानी में मिलता है। चिकित्सा के क्षेत्र में मित्रता, भाई-भतीजे के रिश्ते के ही नहीं बाप-बेटे के रिश्ते के लिए भी कोई स्थान नहीं है। सब कुछ पैसे का खेल बन गया है।

दहेज-प्रथा बरसों से देश की ज्वलंत समस्या है। स्त्री यहाँ बिक्री की वस्तु बन जाती है। अपनी ख़रीदार कहानी में दहेज-प्रथा पर आलोचना की गयी है। नारी दहेज देकर पति पाती है और उसके आगे संपूर्ण सपने को समप्रित कर देती है। नीना की माँ उसकी शादी कराना चाहती है। लेकिन नीना अपने को बिकने में तैयार नहीं है। वह अविवाहित रहकर अपने मनचाहे प्रेमी को ख़रीदकर अपनी जैविक भूख़ को मिटा सकती है। वह साहित्य में रुचि रखनेवाले सुनिल से प्रभावित होकर सोचती है कि विवाह अनिवार्य है क्या? लेखिका भी यही प्रश्न उठाती है कि विवाह के बाद स्त्री-पुरुष आपसी प्रेम के अभाव में बाहरी प्रेम की तलाश करते हैं तो विवाह की क्या ज़रूरत है?

(२) मृदुलागर्ग की कहानियों में परिवार : मृदुलागर्ग ने पारिवारिक समस्याओं को बड़ी गहराई से प्रस्तुत की है। आज पति-पत्नी का संबन्ध विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, भावनात्मक कारणों से अत्यन्त तनावपूर्ण स्थिति में है। पारिवारिक जीवन एक व्यवसाय बन गया था। इसमें पति-पत्नी परस्पर लाभ उठाना चाहते थे। इसका विरोध मृदुलागर्ग की 'तुक' कहानी में मिलता है। पारिवारिक जीवन में उलझन स्वाभाविक है। लेकिन नई परिस्थिति में मामूली बातों को लेकर पारिवारिक विघटन होता है। यह 'क्लब संस्कृति' भी उसका कारण है। दंपतियों को घर में बैठकर बातचीत करने, ख्राना-पकाने तथा ख्राने का समय और मन नहीं है। बच्चा पैदा होना भी बर्डन समझते हैं। इसका चित्रण 'मेरा' कहानी में मिलता है। उनकी कहानियों में नारी की दयनीय अवस्था परपुरुष-संबन्ध टूट रिश्ते, सेक्स आदि का खुला चित्रण मिलता है। वे कभी भी सत्य को छुपा के नहीं रखती। उनकी कहानी 'रुकावट' की रीता विवाहित होते हुए परपुरुष संबन्धों को स्वीकार कर लेती है।

मृदुलागर्ग ने अपनी कहानियों में नारी-जीवन के विभिन्न पहलुओं के साथ-साथ समाज एवं प्रकृति पर भी ध्यान दिया है। उनकी कहानियों में केवल नारी और पुरुष ही नहीं गाँव, शहर तथा देश के सारे परिवेश का अंकन मिलता है।

(१) चर्तित कहानियाँ, मृदुलागर्ग, सामायिक प्रकाशन, जटवाडा, नई दिल्ली।

(२) ग्लेशियर से, मृदुलागर्ग, प्रभाव प्रकाशन, चावडी बाज़ार, दिल्ली।

(३) शहर के नाम, मृदुलागर्ग, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नईदिल्ली।

(४) समकालीन कहानी युगबोध का सन्दर्भ, डॉ.पुष्पालसिंह, नेशनल पब्लिशिंग हउस, नई दिल्ली।

(५) विवरण पत्रिका, डॉ.पुष्पालसिंह, मैसूर हिन्दी प्रचार सभा

एच.एस.एस.टी. जूनियर, जी.एच.एस.एस. पुत्तूर, कोल्लम

लाइब्रेरी पुस्तकों का आदेश अकादमी से प्राप्त करें - व्यवस्थापक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

लक्ष्मीनगर, पट्टमपालस, तिरुवनंतपुरम - ६९५००४

३३ वाँ वार्षिक सम्मेलन : रिपोर्ट

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३३ वाँ वार्षिक सम्मेलन १४ अगस्त २०१३ सबेरे १० बजे से अपराह्न ६ बजे तक तीर्थपाद मंडप, तिरुवनन्तपुरम में मनाया गया। राष्ट्रगीत के साथ पहले सत्र की शुरुआत हुई। अकादमी के मुख्य संरक्षक जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर ने सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। अकादमी के अधयक्ष देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने अध्यक्षीय भाषण द्वारा रवीन्द्रनाथ ठाकुर जी के बारे में सदस्यों को खूब जानकारी प्रदान की। इसका उद्घाटन महामहिम केरल राज्यपाल श्री.निखिलकुमार ने रवीन्द्रनाथ जी के जीवन पर गहरी नज़र डालकर किया था, साथ ही अकादमी की खूब प्रशंसा भी की थी। फिर बीज भाषण में पूर्व राजदूत श्री.टी.पी.श्रीनिवासन ऐ.एफ.एस. ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर और डॉ.एन.चंद्रशेखरन नायर के कार्यकलापों के बारे में सविस्तार जानकारी प्रदान की। अनुमोदन भाषण श्री.राजेन्द्रपरदेसी (भारतीय पब्लिक अकादमी, लखनऊ) ने अकादमी की खूब प्रशंसा करके किया था। इसके बाद अकादमी के महामंत्री श्री.एस.तंकमणि अम्मा ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। राष्ट्रगीत के साथ पहला सत्र खतम हुआ। महात्मा गाणँधी कालेज के प्रोफसर डॉ.उषाकुमारी ने सत्र का संचालन किया था।

दूसरा सत्र

दूसरा सत्र आलेख प्रस्तुती के साथ शुरु हुआ। अध्यक्ष डॉ.तंकमणि अम्मा थी। भारत नवोत्थान और कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर नामक विषय पर हिन्दी शोधार्थी,

(१) कुमारी सिंधु बी.एन.(महात्मागाँधी कालेज); (२) कुमारी पार्वती (महात्मागाँधी कालेज); (३) कुमारी सुस्मिता (महात्मागाँधी कालेज); (४) दीपा आर.एस. (सरकारी महिला कालेज); (५) कुमारी निमिषा जी.पिल्लै (यूनिवर्सिटी कालेज); (६) कुमारी श्रीकुट्टी (यूनिवर्सिटी कालेज); (७) उमा श्रीदेवी (शंकराचार्य यूणिवर्सिटी, त्रिवेन्द्रम); (८) जयश्री वी. (शंकराचार्य यूणिवर्सिटी, त्रिवेन्द्रम); (९) कुमारी रीजा (केरल यूणिवर्सिटी, त्रिवेन्द्रम); (१०) कुमारी आशादेवी (केरल यूणिवर्सिटी, त्रिवेन्द्रम)

छात्रों ने प्रबंधावतरण में अच्छा सहयोग दिया था। यह बिलकुल विज्ञानप्रद था।

तीसरा सत्र

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी का ३३ वाँ वार्षिक समारोह एवं एस.बी.टी. का हिन्दी साहित्य पुरस्कार सम्मेलन दो बजे पद्रह मिनट पर श्रीमती आर.राजपुष्पम के प्रार्थनागीत के साथ शुरू हुआ। अकादमी के महामंत्री डॉ.एस.तंकमणि अम्मा ने सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। चेयरमान देशरत्न डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर ने अकादमी के संपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त विवरण करते हुए हिन्दी और उसके साहित्य श्रीवृद्धि केलिए किस हद तक घोर परिश्रम किया उसका भी स्मरण किया। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि केरल हिन्दी साहित्य अकादमी को एक शशक्त राष्ट्रीय संस्था के रुप में दुनिया जानती है। अकादमी ने केरल में हिन्दी का एक वातावरण पैदा किया। अकादमी का वेबसाईट उसकी सच्ची पहचान करने में जागरुक है। उसने अपने उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का पूरा पालन किया है। अकादमी के मंत्री ने रिपोर्ट प्रस्तुत किया। इसका उद्घाटन माननीय मंत्री श्री.के.सी.जोसफ ने अकादमी और चेयरमान के कार्यक्लापों की खूब प्रशंसा करके किया था। डॉ.एन.राधाकृष्णन (चेयरमान, गाँधीस्मारक निधि) ने अनुमोदन भाषण में अकादमी को खूब प्रशंसा करके आशिशों दीं।

इस वर्ष का मानव संसाधन विकास मंत्रालय हिन्दी साहित्य पुरस्कार माननीय मंत्री से श्री.राजेन्द्र परदेसी ने स्वीकार किया।

इस वर्ष का एस.बी.टी. हिन्दी साहित्य पुरस्कार श्री. ए.एन.कृष्णनजी (मुख्य प्रबंधक) ने प्रदान किया। मौलिक साहित्य केलिए कविताओं की सरिता (कवितासंग्रह) श्री.के.जी.उण्णिकृष्णन, कोच्चि और शोधग्रंथ केलिए "महादेवीवर्मा का गद्य साहित्य: एक पुन. मूल्यांकन" डॉ.ओ.जयश्री असिस्टेंट प्रोफसर, यूणिवर्सिटी कोलेज, तिरुवनन्तपुरम को मिला।

फिर डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी का नवति आदर और पुस्तक का लोकार्पण हुआ। इसका उद्घाटन जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायर (जो नायरजी के शिष्य थे) अकादमी की उन्नति की खूब प्रशंसा करके किया था। डॉ.तंकमणि अम्मा, डॉ.रसिया बेगम (प्रोफ.चेन्नै), श्री.राजेन्द्र परदेसी (भारतीय पब्लिक अकादमी लखनऊ), डॉ.राधाकृष्णन (गाँधी भवन) और डॉ.प्रो.टी.पी.शंकरनकुट्टिनायर (चेयरमेन, केरला इतिहासपीठ) आदियों ने नायर जी की जिंदगी और साहित्यिक एवं कलात्मक रचनाओं पर नज़र डाली और एक मत से कहा कि उनका जीवन नयी पीढ़ी केलिए आदर्श नमूना ही है।

इस सभा में कविसम्मेलन भी चलाया गया उद्घाटन माननीय मंत्री वी.एस.शिवकुमार ने किया था। उन्होंने नायर जी और अकादमी के कार्यकलापों की खूब प्रशंसा की।

श्रीमती जी. कमलम्माजी की अध्यक्षता में कविसम्मेलन हुआ। चेयरमान डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर जी की कविता से कविसम्मेलन की शुरुवात हुई। डॉ.कमलम्मा, डॉ.रसिया बेगम, श्रीमती रमा उण्णित्तान, श्रीमती आर.राजपुष्पम, श्री.उण्णिकृष्णन आदियों ने इसमें भाग लिया।

डॉ.उषाकुमारी के.पी (महात्मा गाँधी कालेज) संचालक थी। विशाल

साहित्य के विकास में गाँधीयुगीन पत्रिकाओं का योगदान

डॉ. आशाराणी बी.पी.

महात्मागाँधी ने भारत की राष्ट्रीय चेतना का अनेक वर्षों तक सफल नेतृत्व किया है और न केवल उस अवधि में किन्तु उनके बाद भी उनकी विचारधारा (गाँधीवाद) भारतीय साहित्य की अनेक विधाओं को प्रभावित किया है। हिन्दी साहित्य के अनेक अंगों और उपांगों में जिस व्यापकता के साथ गाँधीवाद ने प्रभावित किया है वह आज भी उत्तरोत्तर उत्कर्ष के साथ प्रभावित करता जा रहा है।

सन् १९२० से १९४७ तक के पत्रकारिता के विकास काल को क्रांतिकाल नाम कह सकते हैं क्योंकि यह समय स्वतंत्रता आन्दोलन का था और इसका शीर्षस्थ नायक गाँधीजी थे। गाँधीजी स्वयं एक पत्रकार थे और पत्रकारिता को वे वैचारिक क्रांति का सशक्त माध्यम मानते थे। 'यंग इंडिया', 'हरिजन', 'नवजीवन', 'सत्याग्रह' आदि पत्रों का संपादक गाँधीजी थे। उनकी प्रेरणा से अनेक व्यक्ति पत्रकार, संपादक बने। उन्होंने अपने युग की पत्रकारिता को पूर्णतः प्रभावित किया है। इसलिए क्रांतिकाल को गाँधीयुग नाम मिला। इस युग में साहित्यिक पत्रकारिता राजनैतिक पत्रकारिता से पूर्ण रूप से पृथक हुई। यही गाँधीयुगीन पत्रकारिता की सबसे बड़ी उपलब्धि है। 'मतवाला', 'चाँद', 'सुधा', 'हंस', 'कल्याण' जैसे इस युग की प्रतिनिधि पत्रिकाओं में गाँधीयुग की मूल चेतना दिखाई देती है। इन पत्रिकाओं में साहित्य की सभी विधाएँ दर्शनीय है। इस युगीन साहित्यिक पत्रकारिता का अपना महत्व है। इसकी शक्ति एवं संपन्नता के कारण विचारों एवं साहित्य में एक क्रांति का आगमन हुआ। हिन्दी भाषा को परिष्कृत एवं परिणार्जित कर उसे राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने का श्रेय गाँधीयुगीन पत्रकारिता को है।

कविता के क्षेत्र में गाँधीयुग अनेक वादों का युग रहा है। छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि इसी युग में हुआ। इस युग की सबसे बड़ी साहित्यिक उपलब्धि आधुनिक काव्य की स्वच्छन्द धारा है। छायावादी काव्यधारा की सभी प्रमुख रचना पत्रिकाओं के माध्यम से प्रकाशित हुई है। प्रसादजी की 'प्रलय की छाया', 'लहर', 'जागरण', 'कामायनी' इसी बीच प्रकाशित हुई। महादेवी वर्माजी की अधिकांश रचनाएँ, 'चाँद' और 'सुधा' में दर्शनीय है। आदर्श पत्रिका में 'निरालाजी' की 'जूही की कली' प्रकाशित हुई। 'मतवाला' के द्वारा हिन्दी की श्रेष्ठ स्वच्छन्दतावादी कवि निरालाजी का नाम उजगर हुआ।

अनुभूति की दृष्टि से इस युग का काव्य व्यक्तिनिष्ठ होने के साथ समाजिकता से जुडा है। व्यक्ति और समाज दोनों में सामंजस्य इस युग की कविता की विशेषता है। इस युग का काव्य महान उपलब्धियों और संभावनाओं का काव्य है जिसका विकास पत्रिकाओं से हुआ।

हिन्दी गद्य साहित्य के विकास में मासिक पत्रिकाओं ने सर्वाधिक योगदान दिया है। इस युग में निबंध, लेख, कहानी, नाटक, आलोचना के क्षेत्र में उन्नति हुई। १९२० के पूर्व गद्य का परिमार्जन काल था, द्विवेदीजी ने गद्य को संवारकर स्वावलंबी बनाया। प्रेमचन्दजी के संपादकत्व में १९३० में काशी से मासिक 'हंस' का आरंभ हुआ। यह पत्रिका इस युग की कथा साहित्य की प्रतिनिधि पत्रिका है। साहित्य के विविध रूपों का सुन्दर रूप इस पत्रिका में दिखाई देता है।

गाँधीयुग की पत्रिकाओं की विशेषता साहित्य की नव्य चेतना का प्रचार एवं प्रसार है। इस युग के सभी साहित्यकार किसी न किसी पत्रिका के संपादक थे। 'मतवाला', 'चाँद' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं ने अपने युग की साहित्यिक चेतना को दिखाया है। इस युग के साहित्य एवं पत्रिकाओं में सत्य, अहिंसा, धर्म, गाँधीदर्शन आदि दिखाई देते हैं। समाज में प्रचलित अंधविश्वास, रुढियाँ, अस्पृश्यता, बाल-समस्या, वर्ग संघर्ष, वेश्यावृत्ति, सतीप्रथा, पर्दा प्रथा आदि विषयों को लेकर संपादकीय प्रकाशित किये जाते थे। धार्मिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक विषयों पर लेख प्रकाशित किए जाते थे।

गाँधीजी न कवि थे, न नाटककार और न कथाकार फिर भी उनकी साहित्य सेवा अमूल्य है। उनकी भाषा एवं साहित्य संबंधी विचारों ने हिन्दी भाषा एवं साहित्य को प्रभावित किया। माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिली शरण गुप्त, नवीन, प्रेमचन्द, जैनेन्द्र जैसे साहित्यकारों में गाँधीदर्शन का प्रभाव है। पत्रकारिता के संबन्ध में गाँधीजी का मत है कि - "जनता की भावना को समझें और उसे अभिव्यक्त करें"। सत्य यह है कि साहित्य की समस्त विधाओं के विकास में गाँधीयुगीन पत्रिकाओं ने सराहनीय कार्य किये हैं।

साकेतम, आलनतरा, वेन्जारमूड पी.ओ., तिरुवनन्तपुरम। मो: ९०४८८१८०६२

३३ वाँ वार्षिक सम्मेलन : रिपोर्ट...

हॉल में अकादमी में प्रतिमास भारत भर से आनेवाली लगभग २५० पत्रिकाओं को सुसज्जित रखा था। साथ ही चेयरमान डॉ.चन्द्रशेखरन नायर जी के चुने गये ६० ग्रंथों की भव्य प्रदर्शिनी भी थी।

सभा में उपस्थित डेढ़ सौ प्रेक्षकों को भोजन एवं चायसत्कार की भी व्यवस्था की गयी थी। शाम को छः बजे राष्ट्रगीत के साथ-साथ समारोह का सुंदर समापन हो गया।

जय हिंद जय हिंदी

मंत्री, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी

श्री अक्षरगीता (चौदहवां अध्याय)

डॉ.वीरेन्द्रशर्मा, डी-११३, इला अपार्टमेंट्स,
बी-७, बसुंधरा एन्कलेव, दिल्ली-९६

श्रीभगवान बोले-

ऊपर जड़ शाखाएं नीचे
पीपल अव्यय कहलाता
पत्ते वेद, उसे जानो जो
वेदों का है वह ज्ञाता

ऊपर नीचे विस्तृत होकर
फैली शाखाएं उसकी
गुण से होती संवर्द्धित हैं
विषय कोंपलें हैं जिसकी

व्याप्त हो रहा नीचे जिसमें
मूलविविध का सतत प्रसार
बंधनकारी वर्त्य लोक में
है जो क्मों के अनुसार

अंत न आदि न स्थिति ही है
रूप नहीं वैसा इसका
विरति-शस्त्र से करके छेदन
सुदृढ़ मूल इस पीपल का

जाकर जहां नहीं लौटें फिर
शोध्य वही पद भली प्रकार
आदि पुरुष की शरण, जिन्होंने
किया पुरातन भव विस्तार

विजयी हैं आसक्ति दोष के
मान मोह से हुए विहीन
नष्ट हुईं इच्छाएँ जिनकी
हैं अध्यात्मनित्य में लीन

सुख दुःख रूपी द्वन्द्वों से जो
हो विमुक्त जन जो रहते
परम विवेकी ज्ञानी वे ही
अव्यय पद हैं पा लेते

नहीं प्रकाशित करता जिसको
सूर्य, चन्द्र या पावक ही
पाकर जिसे नहीं लौटें फिर
परम धाम वह मेरा ही

अंश सनातन मेरा ही है
जीवात्मा तन में रहता
प्रकृति रूप मन पांचों इन्द्रीं
को आकर्षित जो करता

संचित करके गंध क्षेत्र से
पवन गंध ले जाता ज्यों
तन का ईश्वर तन से तन में
ले जाता है इनको त्यों

क्षेत्र, नेत्र, त्वक् तथा घ्राण का
रसना-अवलम्बन लेता
आश्रय ले मन का जीवात्मा
विषयों का सेवन करता

देह त्यागते, स्थित तन में
अथवा विषय भोगते ही
नहीं जानते अज्ञ गुणान्वित
जानें ज्ञान-नेत्र जन ही

साधक योगी उसे जानते
आत्मा में ही स्थित को
अज्ञ, मूढ़ करके प्रयत्न भी
नहीं जानते हैं उसकी

विवस्वान का तेज जगत को
आलोकित है जो करता
शशि में तेज अग्नि में एवं
वह तेजस मेरा होता

करके धरा प्रवेश ओज से
करता हूं प्राणी धारण
हो सुधांशु मैं रसमय एवं
करता औषधि-संपोषण

सभी प्राणियों से शरीर में
स्थित होकर वैश्वानर
अन्न चतुर्विध पाचन करता
प्राणापान युक्त होकर

स्मृति, ज्ञान, अपोहन, मुझसे
स्थित सबके डर में भी
वेदों द्वारा तथा वेद्य मैं
दृष्टा, तत्ववेत्ता भी

दो प्रकार के पुरुष लोक में
होते क्षर एवं अक्षर
जीवात्मा होता अक्षर है
भूत सभी होते हैं क्षर

पुरुष अन्य अव्यय उत्तम है
परम आत्मा कहलाता
कर प्रवेश तीनों लोकों में
ईश सर्व पालन करता

हूं अतीत क्षर से मैं एवं
अक्षर से भी मैं उत्तम
अतः वेद में, तथा लोक में
हूं प्रसिद्ध मैं पुरुषोत्तम

जाने मुझे पार्थ पुरुषोत्तम
इस प्रकार जो ज्ञानी जन
सर्ववेत्ता सर्व भाव वह
करता मेरा हो पूजन

शास्त्र कहा मैंने यह अर्जुन
परम गोप्य जो कहलाता
जिसे जान निष्पाप विज्ञ जन
पूर्णकाम है हो जाता।

श्रीभगवान बोले-

ज्ञानयोग में स्थिति-दृढ़ता
भय-अभाव एवं ऋजुता
पाठनपठन, दान, मख्र एवं
पत, दम, अन्तस की शुचिता।

सत्य, अहिंसा, क्रोध न होना
नहीं लोभस निन्दा का भाव
भूत-दया, लज्जा, कोमलता,
शान्ति, त्याग, चापल्य-अभाव।

दैवीसंपद्प्राप्तपुरुष में
मान, द्रोह का पूर्ण अभाव
होते धैर्य, तेज हैं एवं
शुचिता, पार्थ, क्षमा के भाव।

प्राप्त संपदा जिन्हें आसुरी
उनमें क्रोध तथा अभिमान
होते दम्भ, दर्प हैं एवं
अर्जुन, निर्दयता, अज्ञान।

हेतु मोक्ष दैवीसंपद् का
किन्तु आसुरी का बंधन
दैवीसंपदप्राप्त पार्थ तुम
नहीं क्षुब्ध हो, चिन्तित मन।

जग में दैवी तथा आसुरी
भूत सृष्टि के पार्थ प्रकार
वर्णन विशद किया दैवी का
सुनो आसुरी का विस्तार।

प्रवृत्ति तथा निवृत्ति अभय ही
नहीं जानते आसुरजन
होते शील न शुचिता उनमें
नहीं सत्यव्रत का पालन।

है असत्य जग, कहते हैं वे
आश्रय रहित, न ईश्वर है
स्वयं परस्पर योगभूत यह
कारण मूल काम हो है।

नष्टआत्मा, अल्पबुद्धि वे
इस दर्शन का ले आश्रय
जग के शत्रु, क्रूरकर्मी वे,
हैं समर्थ करने में क्षय।

दम्भ मान मद युक्त मोह से
दुराग्रहों को कर धारण
आश्रय ले दुष्पूर काम का
भ्रष्टव्रती करते विचरण।

मृत्युकालपर्यत अनेकों
चिंताओं का ले आश्रय
विषयभोग में लीन-यही सुख्र
रहता है उनका निश्चय।

शत शत आशा पाश बंधे वे
काम क्रोध तत्पर रहते
विषयभोग के लिए भ्रष्ट हो
धन - संचय - चेष्टा करते।

मुझे प्राप्त हो गया आज यह
मुझको वह मिल जाएगा
मेरे पास अभी इतना धन
फिर उतना हो जाएगा।

मार दिया यह रिपु है मैंने
मारूं तथा दसरे भी
मैं ही ईश्वर, सिद्ध, सुखी भी
बलशाली मैं भोगी भी।

यज्ञ दान कर सुखी रहूंगा
अन्य कौन है मुझ जैसा
मैं धनाढ्य हूं, बहु परिजन हैं
है अज्ञान मोह ऐसा।

मोहपाश में बंधे हुए वे
बहु संकल्प भ्रंत होते
विषयभोग संलिप्त हुए वे
नरक भयंकर में गिरते।

अहंमन्य धन मान मदान्वित
मख्र करते हैं, अभिमानी
नाम मात्र का दम्भ, दर्प से
सम्यक् विधि के अज्ञानी।

अहंकार, बल, दर्प, काम का
तथा क्रोध-आश्रय लेते
आत्म तथा पर देह अवस्थित
मुझसे द्वेष, द्रोह करते।

करते द्वेष सभी से हैं जो
जग में क्रूर अधम जन को
अशुभ आसुरीयोनिनरक में
सतत डालता मैं उनको।

जन्म जन्म में मूढ़ सभी वे
योनि आसुरी हैं पाते
मुझे न पाकर अर्जुन वे फिर
घोर भयंकर गति पाते।

तीन तरह के द्वार नरक के
करते नाश आत्मा का
काम क्रोध हैं तथा लोभ है
करो त्याग इन तीनों का।

तमोद्वार इन तीनों से जो
हो विमुक्त जाता है नर
पार्थ परम गति पाता है वह
आत्मश्रेय पथ पर चलकर।

करे आचरण मनमानी जो
शास्त्रज्ञान की विधि तजकर
नहीं सिद्धि ही, और न सुख ही
नहीं परम गति पाता नर।

अतः शास्त्र तुमको प्रमाण है
कार्य अकार्य व्यवस्थ में
ऐसा जान शास्त्रसम्मत ही
कार्य योग्य है इस जग में। ●

सम्मेलन के दर्शक वृन्दों में सर्वश्री अड्वकेट अय्यप्पन पिल्लै, डॉ.टी.पी.शंकरनकुट्टिनायर, श्री.के.जी.बालकृष्णपिल्लै आदि।

श्री. राजेन्द्र परदेशी (भारतीय पब्लिक अकादमी नखनऊ) मानव संसाधन विकास मंत्रालय का पुरस्कार माननीय मंत्री श्री.के.सी.जोसफ से स्वीकार करते हैं।

हिन्दी कवि सम्मेलन श्री.जी.कमलम्माजी की अध्यक्षता में चली प्रोफसर डॉ.श्रीलता काव्य - पाठ करती है।

श्रीमती डॉ.ओ.जयश्री एस.बी.टी.हिन्दी पुरस्कार माननीय महाप्रबन्धक से स्वीकार करती है।

श्री.उण्णिकृष्णन के.जी. (एस.बी.टी. हिन्दी पुरस्कार प्राप्त) काव्य पाठ करते हैं।

डॉ. रज़िया बीगम साहित्य अकादमी का पुरस्कार मंत्री श्री.के .सी.जोसफ से स्वीकार करती हैं।

सम्मेलन में उपस्थित संस्कृति मंत्री मानवीय श्री.के.सी.जोसफ और अकादमी बधु डॉ.सी.पी.शंकरनकुट्टि नायर, डॉ.राधाकृष्णन आदि।

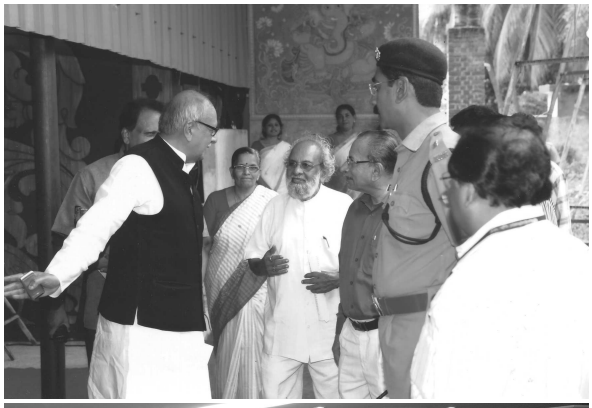

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।